लीला सुधा सिन्धु
पद्य रामायण
: रचयिता :
श्रीमद् स्वामी रामहर्षणदास जी महाराज

॥ श्री सीतारामाभ्याँ नमः ॥

लीला सुधा सिन्धु

(पद्य रामायण)

* रचयिता *

श्रीमद् स्वामी रामहर्षण दासजी महाराज

वसंत पंचमी

(विक्रम सं २०६३)

लीला सुधा सिन्धु (पद्य रामायण)

रचयिता :

श्रीमद् स्वामी रामहर्षण दासजी महाराज

प्रकाशक :
प्रकाशन विभाग
श्री रामहर्षण कुंज,
परिक्रमा मार्ग,
अयोध्या (उत्तर प्रदेश)
दूरभाष : (०५२७८) २३२३१७

तृतीय आवृत्ति : ११००
वसंत पंचमी
(विक्रम सं २०६३)

मूल्य : रु. १५० मात्र

टाइप सेटिंग एवं डिज़ाइन :
डी टी पी सेन्टर, सरस्वती सदनम कॉम्पलेक्स,
धरमपेठ, नागपुर - ४४० ०१०
दूरभाष : (०७१२) २५६०९८९

अनुक्रमणिका

अनुक्रमांक	प्रसंग	पृष्ठ क्रमांक

******

पंच धुनी छाई पुर व्यौमहिं, त्रिभुवन चित चोराई।
सुर नर नाग अपनपौ भूले, उत्सव लख सोहाई।
जनक नृपति की भाग सराहत, सुता सुशक्ति पाई।
हर्षण मिथिला डगर-डगर महँ, प्रेम प्रवाह भाई।

(१७८)

चलो-चलो री सहेली सिय स्वामिनि द्वार।
हिल मिलि गावै भाव बतावै, नृत्य करै सब दै-दै तार।
खेल खिलावैं रस उपजावै, कलित क्रीड़नक विविध प्रकार।
दरशन पावै अति सुख छावै, सब कोउ लहै जनम सुख सार।
सँग-सँग जेवैं प्रिय रस सेवै, भरि-भरि हृदय प्रमोद अपार।
हर्षण गावै जूठन पावै, जनक लली मुख सुधा सुखार।

(१७९)

सजनी अह हा स्वाद बड़ो सुख कारी।
व्यंजन विविध खवावति मैया, करि दुलार सतकारी।
या सुख कबहुँ मिलै नहि आली, जूठ सिया की यारी।
हर्षण मोहिं देहु तनि मैया, चाखि कहहुँ सुख सारी।

(१८०)

अली मोहि सीय चरण की आस।
कृपा कोर नित स्वामिनि करती, फेर दृगन मृदु हास।

सब अपराध विसारण महिमा, वदत वेद सहुलास।
हर्षण चलहु अबहिं सिय मन्दिर, मानि प्रेम को पाश।

(१८१)

सियहिं साथ लै सोउ सुनैना।
सुभग सेज शोभित सुखकारी, पयद पिआवति प्रेम अबैना।
कबहुँ निरखि मुख चन्द्र उमगि उर, पीवति सुधा स्वयं चित चैना।
कबहुँ उरहिं पौढ़ाय सोवावति, कहि कछु मधुरे स्वर सुख ऐना।
रुदंत जानि लघु वाद्य बजावति, ललिहिं रिझावति पलँग परै ना।
कबहुँ पलँग महँ जड़े मणिन मधि, तासु रूप दिखराव सुहैना।
कबहुँ खिलौनन खेल खेलावति, सुखी होति मिथिलेश ललैना।
हर्षण जननि जानकी लीला, यहि विधि होति सेजरिया शयना।

(१८२)

जननी गोद विराजति लाड़िलि, शशि शत कोटि विनिन्द भली।
नील झीन झिंगुली तन झल मल, आभा विद्युत मेघ थली।
कर-पद-कटि कल बाल विभूषण, कलित केश गभुआर लली।
विहँसि-विहँसि माता मुख पर्शति, चहति उठन गर पकरि हली।
कबहुँ पियति स्तन मधु मधुरा, अंचल ओटहिं कमल कली।
कबहुँ कछुक सुनि करि किलकारी, शान्त सुनति पुनि प्रेम पली।
लखि शिशु केलि रानि सुख सानति, ईश कृपा भर पूर फली।
हर्षण भाग कहै को वाकी, आदि शक्ति कहि अम्ब ढली।

(१८३)

गिरिजे धनि-धनि भयो मैं आज।
मिथिलाधिप के बेटी जाई, सब शक्तिन सिरताज।
प्रेम मगन मन रसमय पूरौ, छूट समाधि को साज।
सिय के धाम अबहिं मैं जावौं, दरशन लीवै काज।
रानि सुनैना गोद लड़ैती, विलसति अहा विराज।
आनन्द भवन सुहावन मिथिला, धन्य त्रिलोक समाज।
रमा शारदा गई दरश हित, तुमहु जाहु भल भ्राज।
दास राम हर्षण फल तन को, लेहु तोरि सब लाज।

(१८४)

तान्त्रिक आज बने भोला।
जनक लली दर्शन चित चाहत, निमिपुर खोरिन डोला।
शिशुगन व्याधि विनाशत छन में, करत सुखद शुचि चोला।
भक्त भाव भावित सुखकारी, रुदन लगीं ललि लोला।
ठाढ़े बैठे रहत अंक नहिं, भूप शिवहिं लिय बोला।
नयन लाभ सिय दर्श शम्भु लहि, द्रवित हृदय रवि ओला।
जनक सुता शुचि पर्शि मंत्र पढ़ि, नचन लगे हिय धोला।
सियहिं प्रसन्न हेरि हिय हर्षण, बहुरि गये गृह भोला।

(१८५)

समय-समय विधि हरि हर आवत।
वेष छिपाय बनाइ बहाना, ललिहिं लखन अनुराग बढ़ावत।

मिथिलापुर के खोरिन खोरी, विहरत प्रेम पगे भल भावत।
दशर पाइ श्री जनक लली को, आपुहिं धन्य-धन्य कहि गावत।
यदपि ईश तद्यपि तजि विभुता, सिय पद नव-नव नेह नहावत।
कृपा कोर अहनिशि अभिलाषी, रखि रुख जगत कार्य अपनावत।
तैसहिं तिन की शक्ति सेविका, सिय सेवा करि सुख उपजावत।
हर्षण सुता सुनैना सम सर, कोउ नहि मोरे दृगन दिखावत।

(१८६)

चारु चार बालक लखु आली।
सुधा समुद्र गये जनु पाले, गौर वपुष सुन्दर सुख शाली।
तेज निधान तपस्या मूरति, मुख प्रसन्न अलकैं घुँघराली।
पुर की तियन सँग नृप मन्दिर, लखतहिं सिया नचे दै ताली।
परम प्रेम प्रिय प्याला पी-पी, भये विभोर महा मतवाली।
मूर्छि मही परतहिं लखि रानी, करि उपचार जगाय विहाली।
मधुर-मधुर भोजन करवाई, भूषण वसन पिन्हाय के लाली।
हर्षण-सत्य-सत्य सनकादिक, चारहु जीवन मुक्त सु चाली।

(१८७)

आली लखो सिय सुभग लोनाई।
कनकाङ्गी कल चंपक वर्णी, पद्मा परम सोहाई।
कर तल-पद तल अधर अरुण अति, सुधा सुमूरति भाई।
घुटुरुन चलति पैजनी बाजति, सुनि श्रुति साम लजाई।
मणिमय अजिर छाँह गुनि अन्यहिं, किलकति रूप लोभाई।

पाणि पकरि प्यारित मुख चूमति, हर्ष न हृदय समाई।
पुनि मुख फेरि विलोकति मातहिं, मनहु कहति लखु आई।
हर्षण हेरि सुमन सुर वर्षत, जयति जनकजा गाई।

(१८८)

जनक लली किलकारि घुटुरुअन धावति आली।
वसन विभूषण शिशुपन शोभित, शशिकर निकर हास हिय लोभित,
मनहु अजिर सुख सरित, बहति रस छावति लाली॥
मुरुकि-मुरुकि माता मुख हेरति, कबहुँ ठिठुकि चित चकित बिचारति,
कबहुँ बैठि बहु हँसति, विनोदि बजावति ताली॥
कबहुँ दौरि जननी ढिंग आवति, कबहुँ दूरि पुनि तेहिं ते जावति,
हर्षण लखि शिशु चरित, मातु सुख पावति पाली॥

(१८९)

लाली घुटुरुनि चलि चाला रे किलकी।
जननि जनक मन मोहेउ सुख दै, अनुपम सुन्दरि बाला रे।
रानि बुलावति अपने अंकहिं, नृपतिहु कहि-कहि लाला रे।
दुहुँ दिशि सिया सुधामय चितवनि, चितवति परम कृपाला रे।
तेहिं औसर लक्ष्मीनिधि आये, अनुजा नेह निराला रे।
मोदक युगल दिखाये रसमय, देखतहिं दौरि विहाला रे।
भैया पद कहँ पकरि ठाढ़ भै, लिये गोद सोउ बाला रे।
चूमि प्यारि पुनि स्वकर पवायो, हर्षण भोग रसाला रे।

(१९०)

अम्ब अंक में करति विहार।
कमल कली बिच कनक बिन्दु ज्यों, लसति सिया सुकुमार।
मधुर-मधुर मूरति हिय हारिणि, लोनी ललि गभुआर।
सुख सुषमा श्रृँगार रसाम्बुधि, शोभा अमित अपार।
माँ-माँ कहि तोतराय सुखद सुठि, कहति खड़ी ह्वै प्यार।
मुदित मातु उठि उर छपकाई, चूमति वदन निहार।
सदनन बैठे मोर दिखावति, वाणी मधुर उचार।
जननी नेह निरखि सुर रमणी, हर्ष गई बलिहार।

(१९१)

सिखवति चलनि अँगुलि गहि अम्बा।
लरखराति रहि-रहि पगु धारति, सिय सुख दानि कदम्बा।
बैठनि उठनि चलनि तोतरावनि, हँसनि मधुर मधुरम्बा।
कूजत विहँग शब्द सुनि निरखनि, ठाढ़ जननि अवलम्बा।
कहुँ-कहुँ चारु चकित चित चितवनि, चरित चन्द्रिका ठम्बा।
सबहिं सार की सार सुधातम, जेहि श्रुति कहति अगम्बा।
मिथिला अजिर विहर सोइ सीता, प्रेम के परतंत्रम्बा।
हर्षण जनक लड़ैती सुख लगि, जियै सहै किमि धम्बा।

(१९२)

चलति पगन मिथिलेश दुलारी।
ठुमुक-ठुमुक कर केलि वाद्य लै, निमिकुल की उजियारी।

दुइ-दुइ दसन सोह मुख बिहसनि, झरति अमिय रसधारी।
नृप रनिवास पियत दृग दोनन, ज्ञान विराग बिसारी।
किलकि-किलकि सिय कहति जननि सों, लै चलु मोहिं अटारी।
गहि कर कमल चली मुद माता, पागी प्रेम मझारी।
बहुरि अंक लै जाय तहाँ पुनि, दिखराई चितसारी।
चित्र विविध विधि लखि सिय हर्षी, हर्षण प्राण पियारी।

(१९३)

लखि चितसारी सिया पुलकाति।
जानत नहीं चित्र केहि केरे, केहि विरचे सुखदात।
तदपि निरखि अतिशय मुद मानति, हृदय अधिक सरसाति।
गोद लिये जननी-दिखरावति, कहि-कहि मधुरी बात।
नाम ग्राम गुण परिचय देवति, सुनति लली मुसुकाति।
कतहुँ हँसति कहुँ देत थपोरी, कतहुँ मौन रहि जाति।
कतहुँ चकित चित चित्रहिं पूँछति, कवन अहै यह मात।
हर्षण अम्ब मुखहिं सुनि समुझी, प्रेम प्रफुल्लित गात।

(१९४)

लोनी-लोनी खेलनि मन हारि रे।
छगन मगन सिय अँगना क्रीड़ति, मन महँ मोद पसारि रे।
उर्मीला माण्डवि श्रुति कीरति, भगिनि भली सुख कारि रे।
चन्द्रकला श्री चारुशिला जी, हेमा छेमा वारि रे।
मदन-मंजरी सुभगा विमला, गंधा पद्म सुखारि रे।

वरारोह वरबर्णी राजहिं, संग सखी शुचि झारि रे।
लघु-लघु भूषण बसन विमोहै, शोभा सुखद अपारि रे।
मातु पिता भ्राता जन रंजनि, हर्षण हिय बलिहारि रे।

(१९५)

रतन पीठ राजत लक्ष्मीनिधि, रूचिर सीय निज गोद लिये।
कबहुँ चूमि मुख हिये लगावत, कबहुँ विलोकत नयन दिये।
कबहुँ अंगुरि निज पान करावत, कबहुँ दुलारत प्रेम पिये।
चन्द्रकला सुषमादिक हेमा, लिपटि रही किलकारि किये।
दखिन भाग श्री भानु दुलारी, मुख पर मुख धरि लगति हिये।
हेमा पृष्ठ भाग ह्वै ठाढ़ी, चहति चढ़न सिर करहिं दिये।
शीला चारु दहिन भुज पकड़े, सुभगा हर्षित वाम लिये।
औरहु अनुजा सब दिशि घेरे, भइया गोदहिं आस लिये।
वरषि सुमन सब देव सराहत, लक्ष्मीनिधि प्रणाम किये।
दास राम हर्षण सब भगिनिन, सेवत प्रेम पियूष पिये।

(१९६)

क्रीडति नवल किशोरी सखिन सँग आजु।
यदपि बाल तउ प्यारति अलियन, खेलतहु खुनिस न थोरी।
हसनि तकनि बतरानि मधुर मधु, सैन सुखद् रस बोरी।
कन्दुक फेंकनि धावनि इत-उत, पैजनि बजनि विभोरी।
चंचल चित्त चतुरता सुखमय, प्रिय मुख चन्द करोरी।
लखि-लखि देव सुमन बहु वर्षत, करत जयति जय शोरी।

जननि जनक वर बन्धु विलोकत, कलित केलि चित चोरी।
हर्षण भाग कहै किमि तिनकी, शुचि सुख सिन्धु हिलोरी।

(१९७)

आँगन में खेलत सिय आई।
गिरिजा मूर्ति बनाय बिठाके, अक्षत अरु सुमन चढ़ाई।
धूप दीप दै भोंग आरति, जय जगदम्बे गाई।
अलि गण वाद्य वजावै गावै, सिगरी पुनि-पुनि बलि जाई।
हर्षण हेरि सियहिं सुख सानत, जननि जनक अरु बड़ भाई।

(१९८)

करत केली किशोरी सहित सखियाँ।
भाँति-भाँति के सुभग खिलौने, खेलन हेतु सुखद अँखियाँ।
शुक पिक मोर परावत पक्षी, को कह वाद्य विपुल भषियाँ।
गुड्डा गुड़िया केलि पालकी, हय गय कृतिम ललित लखिया।
भोजन पात्र फूल फल मन्दिर, तरु वर बेलि बढ़ी शखिया।
देवी देव धेनु द्विज सन्तहु, शोभित सुभग घरन तखिया।
हर्षण वसन विभूषण कन्दुक, औरहु केलि रसहिं चखिया।
भैया लै-लै आन दिये हैं, आनँद लली हियहिं रखियाँ।

(१९९)

बलिहारी सिया स्वरूप की।
सखि बिच सोह नखत मधि चन्दा, अमृत चुअत अनूप की।

गुड़िया गुड्डा व्याह रचाई, क्रीडति लली सुभूप की।
जुरे बराती और घराती, बाजा बजत न चूप की।
स्वागत साज विविध विधि साजी, पूजा भई सधूप की।
मंगल गीत भाँवरी फेरी, भोजन भयो सु पूप की।
दुलहा-दुलही एक सँग बैठे, प्रीति भात भल सूप की।
हर्षण हृदय हिलोर मगन सब, क्रीड़ा सखि अनुरूप की।

(२००)

करहिं पसारति अम्ब प्रमोदी, बोलति मधुरे आ आ आ।
बाछल भाव भरी नव नेहनि, धनि धनि जनक राउ की गेहनि,
लेन चहैं सिय काहिं स्व गोदी॥
करहिं कलेउ लली तै मोरी, प्राण पियारि बनी भल भोरी,
केलि करति किमि भूखहिं खो दी॥
क्रीड़ा विरति सिया नहिं चाहति, उर उमंग छन-छन नव बाढ़ति,
ना ना कहति सुनाय विनोदी॥
सकल सखिन समुझाय सुनैना, लीन्ही संग सबहिं चित चैना,
सीतहिं अंक लिए मन मोदी॥
सहित अलिन शुचि सुता खवाई, विविध भाँति पक्वान्न मिठाई।
जननि प्रेम जग बीचहिं बो दी।
बहुरि विभूषण वसन विभूषी, निरखि चन्द्र मुख पियति पियूषी,
सुख के सिन्धु प्रविशि भै ओदी॥
हर्षण जननि जनकजा प्रीति, मन वाणी बुधि पार अतीती,
कहत बनै नहिं नयना रो दी॥

(२०१)

मैया मोरी काहे न कीजै चोटी।
बिथुर बाल मम आनन आवत, करौं चाह किन कोटी।
क्रीडन काल उपाधि करत जब, ह्वै जावत मन मोटी।
भली भाँति गूथैं नहि तू री, समुझि मनहिं मोहि छोटी।
अबहिं सुधार सबहिं विधि अम्बा, केश कला विद ढोटी।
बिना गुँथे नहि खेलन जै हौं, जाउँ पलँग पर लोटी।
कौन काज महँ व्यस्त कहहु सत, दासी दास न टोटी।
हर्षण मातु कही तब गुथि हौं, खावै जब घिउ रोटी।

(२०२)

मातु सम्हारति चोटी लली की।
इतर फुलेल लगाय के कँघी, कीन्ह दुलारत ढोटी।
सुठि सटकार केशावलि कारी, नागिन सी भुँइ लोटी।
बहुरि गूथि मणि गुच्छन दीन्ही, वेणी उत्तम कोटी।
सुमन सुगन्धित सद शिर भूषण, शोभित सुभग अजोटी।
शशि शत कोटि लजत लखि आनन, रती रमा सब छोटी।
दै दर्पण जननी जिय चाहति, होय न दृग ते ओटी।
लखत लाडिली भई मगन मन, हर्षण लखि भल चोटी।

(२०३)

सखिन सँग क्रीड़ति सिय सुखकन्दा।
चक्रा कार घूमि कल केली, करति बिना दुख द्वन्दा।

शोभित सुषमा सार सुभग तन, नखत मध्य जनु चन्दा।
छूटि कपोल अलक अलि पीवहिं, मुख सरोज मकरन्दा।
कछुक काल किय खेल विरामहिं, परम चतुरि स्वच्छन्दा।
मातु समीप भूख लगि बोली, ठुनकति मुख नृप नन्दा।
सुनत सुनैना झारि पोंछि तन, परी प्रेम के फंदा।
हर्षण हेरि दुलारि पवाई, अंक लिए जग वन्दा।

(२०४)

मैया अब नहि जात जगी।
झुकि-झुकि परहुँ बैठ तव गोदी, निद्रा अधिक लगी।
पग पिरात किय क्रीडा बहुती, अलियन प्रेम पगी।
पलँग पराव स्वयं सँग पौढ़ी, देहि सोवाय सगी।
सुनि प्रिय वचन पुत्रि नव नेहनि, रस वात्सल्य रँगी।
अंक उठाय सियहिं लै सोई, मनहु नहीं विलगी।
नींदउ वदन सुहावन सिय को, लखतहिं भान भगी।
हर्षण जननि सफल जिय जानति, जानकि ज्योति जगी।

(२०५)

प्रात समय उठि अम्ब सुनैना सिय कहँ जाय जगावै।
उठहुँ-उठहुँ मम लाड़िलि लोनी, कलरव शकुन मचावै।
अरुणोदय बेला अब आई, उड़गन मलिन जनावै।
संध्या करहिं वेद द्विज उचरैं, चिन्तत ब्रह्म सुहावै।
नौबत बजति भैरवी रागहिं, गायक गुण गण गावैं।

अलियाँ आय बैठि तव पौरी, दरश हेतु ललचावैं।
सुनत सिया उठ बैठि पलँग पै, दृग झाँपति अलसावै।
जननि उठाय हर्ष उर लाई, यत्ननि नींद भगावै।

(२०६)

जागु लली भल भोर भयो।
सकुचे कुमुद समय अरूणोदय, नखत मलिन बहु तिमिर गयो।
चकवा चकई मिलन सुबेला, शकुन शोर चहुँ दिशिहिं चयो।
कमल कली विकसित गुनि भ्रमरहु, मधुहिं पियन गुंजार कयो।
जननी शब्द श्रवण सुनि लाड़िलि, जागी दोउ कर दृगन दयो।
उठी बैठी कंचन शैया पर, आलस भरि भल छबिहिं छयो।
बार बार जमुहाति कहति माँ, अँग अँगड़ाई ठुनुकि लयो।
हर्षण अम्ब हृदय महँ लइकै, चूमी मुख मधु मधुर मयो।

(२०७)

भोर भये जागी जिय अलसात।
जनक सुता लक्ष्मीनिधि अनुजा, बार बार जमुहात।
मा मा कहति सुनैना सुनतहि, लीन्ह हृदय हर्षात।
मुख धुवाइ कर-पद-दृग पोंछी, दीन्ह कलेउ सुहात।
चोटी करि वर वसन विभूषण, पहिराई सजि गात।
तेहि औसर भूपति पगु धारे, ललिहिं लखन ललचात।
करि दुलार निज अंकहि लीने, गये बहिर सरसात।
लखि-लखि पिता पुत्रि दोउ प्रमुदित, हर्षण बलि बलि जात।

(२०८)

जागी जनक दुलारी भोर भये।
समय समुझि लक्ष्मी निधि आये, अनुजा प्रीति अपारी।
निशा विरह आतुर सम भाषत, भ्रात भगिनि सुखकारी।
मन प्रसन्न मुख पंकज विकस्यो, इक-इक काहिं निहारी।
अंक लिए सिय श्री निधि सोहत, चुम्बत वदन पियारी।
लालिहु ललकि भ्रात गल लिपटी, नेह नवल अविकारी।
खेलन खान वस्तु भल दीन्हे, जनक सुवन सब वारी।
हर्षण नेह निरखि दोउ नयनन, बहत हृदय रस धारी।

(२०९)

भोरहिं आय सबहिं निमि बाला, चाहहिं दर्शन प्रेम फँसी।
सिय मुख चन्द निरखि सुख सानहिं, जिमि चकोरि रम रूप रसी।
अलिन विलोकि ललिहु मन मोदति, प्रेम स्वरूपा प्रेम वसी।
हिल मिलि अजिर करहिं कल क्रीडा, इक-इक सुख के काज लसी।
जननी जनक लखत अनुरागत, आनँद सिन्धुहिं जात धँसी।
श्री मिथिलेश लड़ैती लखि लखि, उमा रमा शारदहु जसी।
बनि बाला सिय के सँग क्रीडहि, मानहिं भाग भली विकसी।
हर्षण मिथिला देव सराहहिं, भाग विभूति वृहद विलसी।

(२१०)

श्री निधि सियहि अंक लै प्यार।
परम रम्य गृह वाटिक विहरत, मानत मोद अपार।

विविध भाँति के सुमन सुहाये, पक्षी प्रिय रव कार।
लता वितान सुहावन दृग के, वृक्ष नमें फल भार।
कहि–कहि नाम दिखाव दुलारिहिं, गुण गण विविध उचार।
लखि–लखि सिया सहज सुख सानति, भैया गोद मझार।
सुर–सुरतिया देखि दोउ अनुपम, नयन लुभावन वार।
वर्षत पुष्प जयति जय उचरत, हर्षण ह्वै बलिहार।

(२११)

छहर छवि नृत्यत नव–नव मोर।
लखहु लली फहराय पंख प्रिय, शोभित सुख प्रद प्रेम विभोर।
मधुर–मधुर मृदु बोली बोलत, वारिद सों कर प्रीति अथोर।
सुनत भ्रात की बात जनकजा, देखि सुखी भइ हृदय हिलोर।
कहति मोहि चहिये यह केकी, क्रीडा करहुँ सखिन सँग जोर।
करि प्रयत्न लक्ष्मी निधि लाये, परसि प्रसन्न भई सुनि शोर।
कछुक काल रहि गयो बहुरि उड़ि, सिसकन लगी सिया तेहिं ठौर।
श्री निधि कहे याहु ते सुन्दर, हर्षण देहु शकुन चित चोर।

(२१२)

सियहु धरि धीरज नेहहिं पाग।
भैया वचननि किए प्रतीती, केकी चाह चित महँ जाग।
श्री निधि कृतिम मोर बनवाई, आन दिये अनुजा सुख लाग।
रत्न जटित चम चम पर बिखरे, नृत्यत पवन प्रसंग सुभाग।

तैसहिं कहुँ-कहुँ कूँज उठत प्रिय, लीन्ह लली तेहिं करि हिय राग।
भ्रात कहेव यह मोर न उड़ि है, सखि सह क्रीड़हु अजिरहिं बाग।
सुनत सिया अतिशय सुख मानी, भ्राता प्रीति पगी बड़ भाग।
हर्षण धनि मिथिलेश लाल ललि, जन्म-जन्म नव नेहहिं माँग।

(२१३)

श्री निधि सिय को अतिहिं दुलारी।
अंक लिये नव नगर दिखावत, चढ़े मनोहर महल अटारी।
चन्द्र कला को चन्द्र प्रभा सम, भानु कला को भानु प्रकारी।
चारु शिला को मेरु सरिस लखु, हेमा को गृह हेम सम्हारी।
क्षेमा को गृह क्षेम प्रदायक, सुभगा को यह सुभग अगारी।
विमला को यह विमल सुमन्दिर, निरखहु मोरी सिय सुकुमारी।
यहि प्रकार सब सखिन सदन कहँ, भगिनिहिं भ्रातु बताव पियारी।
सुनि लखि लली हृदय हर्षानी, हर्षण भैया प्राण अधारी।

(२१४)

निमि कुल भूषण श्री निमि नन्द।
लक्ष्मी निधि निज भगिनि विलोकी, पीवत शान्ति सुधा सुख कन्द।
क्षणमपि विरह सहत नहिं सिय को, फँसे प्रीति के प्रवल सुफन्द।
तैसहिं सिया भ्रात दृग देखी, शीतल रहति सदा जिमि चन्द।
नयन ओट चाहति नहिं कबहूँ, तेहिं बिन करनि लगति सोउ क्रन्द।
भैया अंक बैठि सुख सानति, भोजन करति अघाय स्वछन्द।

बाल भाव कहुँ कछु–कछु पूँछति, मधुर मधुर बतराय अमन्द।
हर्षण अनुजा भ्रात प्रीति प्रिय, सुरति करत मेंटति दुख द्वन्द।

(२१५)

भैया कर कन्दुक पाय उमंग।
अति प्रसन्न मन भई लाड़िली, कह अब चहिय पतंग।
सोउ दीन्हे लक्ष्मी निधि हर्षित, अनुजा प्रीति अभंग।
बोली सिया बनै नहि खेलत, खैंचहि कस यह चंग।
जनक सुवन निज पाणि सिखाये, यथा केलि को ढंग।
जोहि जनकजा नेह समानी, पुलकि उठे सब अंग।
क्रीडन लगी भ्रातु के आगे, चन्द्र कला सँग–सँग।
हर्षण हर्षि बलैया लेवत, जीवहु जब लगि गंग।

(२१६)

सुभग चित सारी लखैं सिय आज, बाल केलि लव लायो।
भ्रात मुदित निज अंकहि लीन्हे, लली हेतु निज सरवस दीन्हे,
दिखरावहिं तेहि सुख के काज, चित्र चतुर चित चायो।
सुर नर मुनि किन्नर गंधर्वा, तियन सहित सोहत जो सर्वा,
संत स्वरूप सकल सुख साज, भक्ति ज्ञान भल भायो।
देखि–देखि हिय हर्षति भारी, सखिन सहित श्री जनक दुलारी,
पूछति तिन गुण ग्राम विराज, हर्षण सुनि सुख पायो।

(२१७)

लखहुँ अहैं ये सबहिं शिवालै।
कल्याणेश्वर और जलेश्वर, क्षीरेश्वर ये हैं शशि भालै।
ये मिथिलेश्वर मिथिला त्राता, मिथि वंशिन के सुख प्रद आलै।
धाम चतुर्दिक सोहत सुखमय, रक्षत नगरी प्रणतन पालै।
भक्त काम तरु अवढर दानी, सर्वस वारि देहिं करुणालै।
सुनत भ्रात मुख सिया प्रहर्षित, देखति शम्भु सदन सुख शालै।
भैया अंक लिये मोहि प्रमुदित, मंगल लखहिं माँगि मन लालै।
हर्षण सुमन सुरन झरि लाये, लखत लली भल भाव उरालै।

(२१८)

शिशु पन के सँसकार सबै री।
क्रमशः भये सिया के सुखमय, उत्सव अधिक अनूप छवै री।
दान मान महिसुर बहु पाये, सुर प्रसन्न शुचि सुमन बवै री।
पंच धुनि पुर व्योम विराजति, सुख शोभा नहिं कहत फबै री।
पुर नर नारि विभोर बने सब, बजत बधाव विनोद दबै री।
चन्दन चारु कुंकुमा केशर, दधि इत्रहु छिरकाव भबै री।
आनँद मिथिला खोरिन खोरी, बहत-बहत त्रिभुवनहिं तबै री।
हर्षण हर्षि सुमंगल गावत, ललिहिं जात बलिहार नवैं री।

(२१९)

समय समुझि सद्‌गुरु गृह आये रे।
विद्यारंभ ललिहिं करवाई, पूजा भेंट बहुत विधि पाये रे।

सन्यासिन बनि शारद आई, सिया सेव ललचाति सुभाये रे।
गुरु निदेश अन्तः पुर बसि कै, लगी पढ़ावन ललिहिं लुभाये रे।
अल्प समय सब विद्या दीन्ही, कहत कवी हिय अति सकुचाये रे।
जेहि रुख प्रगटति विद्या माया, सत गुण सत प्रकाश दरशाये रे।
सो सिय पढ़ै ललित हित लीला, प्रेमिहिं प्राण समान सुहाये रे।
हर्षण जीवन्मुक्त सुनहिं सत, त्यागि समाधि नेह नव छाये रे।

(२२०)

वीणा मुदित बजावति प्यारी।
मधुरी-मधुरी लेति अलापैं, फेरति अँगुलि स्वरन सुख सारी।
चन्द्रकलादि सखी सब सोहै, निज-निज करन वाद्य झनकारी।
गांधर्वी विद्या भुवि श्रेष्ठी, मिथिला महि मिथिलेश दुलारी।
राग रागिनी दास दासि बनि, सेवहिं सबै समय अनुहारी।
कर्णवन्त सुनि-सुनि सुख सानहिं, जड़ चेतन बूड़हिं रस धारी।
जननि जनक भ्राता मन मोदहिं, कौन कहत कवि होवहि पारी।
हर्षण हर्षि हृदय हुलसावत, दीन्हेउ अपनो सरबस वारी।

(२२१)

सदगुण सबहीं सियहिं वरे री।
क्षमा दया कृप करुणा भक्ती, शील सकोच स्वरूप धरे री।
श्रद्धा प्रीति मयत्री मुदिता, शम दम सुठि संतोष खरे री।
विरति विवेक कहै को शुचिता, पर परमार्थ सुमूर्ति ढरे री।
अति अनन्यता भाव भरो हिय, कोउ सम अतिशय नाहिं अरे री।

वर वात्सलता सुठि सौलभता, सबहिं अभयता दान झरे री।
यम अरु नियम महाव्रत जेते, बसे सिया के हृदय घरे री।
विप्र धेनु सुर संत हितैषी, हर्षण जिव हित सदा करे री।

(२२२)

जनक भवन की भूषण सीता।
श्री निधि अनुजा लली जनकजा, जननि सुनैना प्राण पिरीता।
लक्ष्मि की लक्ष्मी देवि की देवी, सुख सुषमा श्रृँगार अमीता।
सुख की सुख जीवन की जीवनि, प्राण-प्राण प्रिय प्रेम पुनीता।
हर्षण सत-सत सबकी सर्वस, विधि हरि हरहु जासु भयभीता।

(२२३)

किशोरी जू के तन सम्पत्ति अपार।
सुठि सौन्दर्य सुधा को सागर, छन-छन बढ़त करार।
मधु माधुर्य महोदधि महिमा, सौकुमार्य सुख सार।
सौष्ठव लावण कल कोमलता, ललि लालित्व अगार।
वशीकरनि मोहकता महती, त्रिभुवन तिय उजियार।
पद्म गंध विकसति वपु तेरे, रस की रस धनिधार।
चन्द्र कोटि शत विजित वरानन, मन वाणी बुधि पार।
सुख सुषमा श्रृँगार की मूरति, हर्षण भव रस खार।

(२२४)

किशोरी जू के मधुर-मधुर मृदु बोल।
सत्य-सुखद-प्रिय-पर हित साने, निकस अमिय रस घोल।

मुख निसृत नभ माहिं समावत, सुनतहिं कर्ण किलोल।
जीव जन्तु पशु पक्षी जेते, जे जड़ जगत अड़ोल।
शब्द सुनत सिय के भरि आनँद, होहिं विभोर विचोल।
सुर नर मुनि की कहा कहै कोउ, प्रेम पगे बिन मोल।
श्रवण रहत अकुलात सबहिं के, सुनियहिं वचन अमोल।
हर्षण सुमिरि हृदय हठि पिघलत, भानु विलोकत ओल।

(२२५)

पूजति सिय साकेत बिहारी, पराधाम को रूप सम्हारी।
बैठि विविक्ते यदपि बालिका, ध्यान मगन दृग अँसुअन धारी।
जाय जननि अरु जनक विलोके, वस्त्र विनिर्मित मूरति प्यारी।
सियहिं जगाय गोद लै बोले, सुन्दर विग्रह तव सुख कारी।
पूजन हित बनवैहैं लाड़िलि, जस रुचि होवै हिया तिहारी।
अस कहि तुरत मूर्ति बनवाये, नील मणी की सिय मत पा री।
सोई लगी पूजवे चित दै, प्रेम पगी हिय हर्ष अपारी।
हर्षण हिय को भाव धन्य धनि, धनि-धनि निमि कुल की उजियारी।

(२२६)

कथा सुनति सिय हृदय हिलोर।
प्रीति पगी रुचि पूर्ण प्रवीनी, यदपि बाल तउ बनति विभोर।
कबहुँ जननि मुख कबहुँ जनक मुख, कबहुँ भ्रात ते सुनति निहोर।
कबहुँ आय यगवलिक सुनावहिं, उपनिषदी कल कथा अँजोर।
वेद पुराण शास्त्र शुचि गाथा, कहुँ इतिहासिक है रस बोर।

श्रवण मनन निदिध्यासन सिय करि, कहति अलिन ते करि कृप कोर।
सुनि–सुनि सखी सबहि सुख सानै, सिय सनेह वर्णहिं बनि भोर।
हर्षण हृदय समुझि सुख पागेव, अहहिं जनकजा सब विधि मोर।

(२२७)

सखिन सँग क्रीडति सिय सुकुमारी।
चौसर खेल रची सब हिल मिल, चन्द्रकलादिक प्यारी।
प्रीति पगी एक–एकहिं केरी, चहहिं न कोउ–कोउ हारी।
तदपि दाँव जस परत करहिं सब, क्रीड़ा हित निमि वारी।
इक एकन की गोटी मारहिं, चाल चलहिं सुविचारी।
केलि कला कोविद अलबेली, सबहिं सुभग सुखकारी।
सिया जीति लखि सखि सब हर्षहिं, अलि जय जनक दुलारी।
हर्षण जननि जनक सुख पागत, भ्रात बहत रस धारी।

(२२८)

श्रीनिधि भगिनि पियारी, सखिन सँग झूलैं हो।
महल मझारे अनूपी, अशोक की गछिया हो।
वाही पै झूलै झुलनमा, सिया सुख अछिया हो।
शुचि श्रावण सुठि सोहै, सुखद हरियारी हो।
नचत मोर मन मोहै, घटा लखि कारी हो।
राग मलारहिं गावै, रसहिं रस वरषै हो।
जननि जनक भल भ्राता, हियहिं हिय हर्षे हो।

वर्षि सुमन झरि लाये, सुरहु सुख दोहैं हो।
हर्षण जय-जय बोलैं, ललकि ललि जोहैं हो।

(२२९)

झूलति श्रावण सिया हिंडोर।
बैठी भैया अंक बिराजति, मन महँ मोद अथोर।
झूलन वेग जबहिं कछु दरशत, भय भरि बनति विभोर।
लिपटि रहति भ्राता तन पकरी, लखतहिं दृग तेहिं ठौर।
मन्द मन्द झूलन गति होवति, जाति सिया सुख बोर।
अनुजा आनँद अतिहि अघावै, सोई करतब मोर।
अस विचारि हिय लाड़िलि लाली, श्री निधि झुलत हिलोर।
हर्षण सियहु अधिक सुख सानति, भ्रात प्यार लहि जोर।

(२३०)

बन्धु ब्याह सीता सुख सानी।
सखिन सहित उर उमगि-उमगि कै, प्रेम प्रवाह समानी।
जननि जनक संभार करहिं सब, उत्सव उदय महानी।
भगिनि अलिन मिलि मंगल गावति, जनक लली प्रिय बानी।
लक्ष्मी निधिहिं ब्याहि घर आये, भूप सुदिन शुभ जानी।
सिद्धि कुँअरि भाभिहि लखि नयनन, सुन्दरि सुखद सोहानी।
भई मगन सिय आनँद अम्बुधि, दशा न जाय बखानी।
हर्षण सिद्धिहु लखत लाड़िलिहिं, सुख सनि भान भुलानी।

(२३१)

जनक सुवन सिखवत निज प्यारी।
श्रीधर राजकुँअरि सुख सागरि, सब विधि मम अनुरूप सम्हारी।
सिय सेवहिं गुनि मम शुचि सेवा, तासु चाह मम चाह विचारी।
अष्ट याम सेवहु सब भाँतिहिं, जेहि ते रहै प्रसन्न दुलारी।
अनुजा सुखी सुखी मैं सहजहिं, तासु दुखहिं नहिं सकौं निहारी।
मंगल लली मोर बड़ मंगल, जानेहु सदा मोर हितकारी।
हौ सहधर्मिणि सहचरि मोरी, प्राण प्रिया दुहुँ कुल उजियारी।
सुनि सुख मानि सिद्धि परि पैयाँ, हर्षण हर्षि भई बलिहारी।

(२३२)

सिद्धि सिया पै सरबस वारी रे।
लक्ष्मी निधि जिमि सिय सुख चाहत, प्राणन प्राण पियारी रे।
श्रीधर कुँअरि तथा निज ननदहिं, मानत आत्म अधारी रे।
सियहु सुखी भाभी भल पाई, परमा प्रीति पसारी रे।
मज्जन अशन शयन सँग संगहि, इक एकहि सुख कारी रे।
निज-निज मनहिं परस्पर मेली, क्षीर नीर इक धारी रे।
लखि-लखि जनक सुनैना हर्षत, श्री निधि हर्ष अपारी रे।
हर्षण सुख की सरित बहत नित, मज्जहिं पुर नर नारी रे।

(२३३)

सिद्धि सहित अनुराग ढरे।
लक्ष्मी निधि सिय सुख के हेतहिं, चेष्टित रहत सुभाग भरे।

अशन वसन स्त्रग चन्दन इत्रा, विविध विभूषण मनहिं हरे।
सुखद साज क्रीड़न की देवत, नित्यहिं तेहिं रुख राखि चरे।
जनक लली आनँद निज आनँद, चाह स्वचाह बिचार भरे।
लखि-लखि परम प्रसन्न सिया मुख, प्रेम पगे सुख सिन्धु परे।
भाभी भ्रात नेह को निरखी, सियहु सुखी रह लिपटि गरे।
हर्षण हेरि-हेरि हिय हर्षत, भगिनि भ्रात रस झरनि झरे।

(२३४)

जननि जनक की नयन पुतरिया रे, पलकन बिच विहरे।
भाभि भ्रात की प्राण अधरिया रे।। पलकन।।
जेहिं विधि सुखी होंहिं सब परिकर, सोइ संयोग सिया अचरिया रे।
शिष्टाचार निपुण भरि भावहिं, करति यथा श्रुति सब व्यवहरिया रे।
जेहिं ते सिया बोल मृदु बैननि, जेहि चितवति कृप कोर नजरिया रे।
सो कृतार्थ बनि भाग सराहत, धनि-धनि मिथिला नवल नगरिया रे।
पुर नर नारि ब्याज उपहारहिं, आवै लै-लै ढोव अपरिया रे।
देखि लली दृग सफल करहिं सब, सोउ करै सनमान सुघरिया रे।
हर्षण मुदित महीपति दम्पति, प्रेम विवश हिय करत कहरिया रे।

(२३५)

वर्ष ग्रन्थि श्री जनक लली की।
जननि जनक भल भ्राता भाभी, मुदित मनावत मोद थली की।
उरउमगत उल्लास भरे सब, जय-जय उचरहिं कमल कली की।

पंच धुनी छाई पुर व्योमहिं, धनि सुख सुषुमा गली गली की।
आनँद मगन नचहिं नर नारी, पगे प्रीति प्रिय प्रेम पली की।
मणि गण भूषण वसन लुटावहिं, चहहिं कुशलता दोष दली की।
कुंकुम केशर दधि इत्रादिक, छिरकहिं भरि-भरि भाव भली की।
हर्षण हर्षि सुमन सुर वर्षत, कहत भाग भलि भूमि तली की।

(२३६)

सुखद सिया सुख सिन्धु सनी।
अम्ब अङ्क भ्राजत बनि भोरी, लिपटि हृदय जनु बाल पनी।
कहति हुलसि हे मैया मोरी, आज सुदिन सुख रूप बनी।
भैया के कर रक्षा बन्धन, बँधिहौं गुनि निज भाग घनी।
बिन भ्राता जेती जग बाला, तिनकी अतिहिं अभाग गनी।
मोरे तो भैया भल सोहत, तिन सम त्रिभुवन नाहिं जनी।
उमा रमा ब्रह्माणी ललचत, नहि अस अग्रज अपुन ठनी।
हर्षण भाग सबहिं बिधि मोरी, भैया भाभी जगत मनी।

(२३७)

सुखद श्रावणी पूर्णम आज, लली हृदय हर्षायो।
चन्द्रकलादि सखिन सों बोली, रक्षा बन्धन तिथी अमोली,
भगिनि भ्रात की सुख कर साज, नेह नदी नहवायो।
रक्षा सूत्र सु अग्रज पाणी, बाँधै बहिन हृदय हुलसानी,
चलहिं सबै जहँ बन्धु विराज, प्रेम मूर्ति भल भायो।।

असकहि लीन्हे सिया सहेली, गई मुदित मन प्रेम पुतेली,
लखतहिं लक्ष्मी निधि भल भ्राज, सीतहिं गोद बिठायो॥
भाव भरे हिय हरषि दुलार्‍यो, रक्षा सूत्रहिं सियहि सम्हार्‍यो,
बाँधि कंज कर भइ कृत काज, भैया भाव भुलायो॥
सखि सह नवल नेग मुख मागी, भ्रातु कृपा प्रिय प्रीतिहि पागी,
श्री निधि तदपि वसन बहु भ्राज, भूषण दियो अमायो॥
कहेउ लाड़िली तिहरे योगू, मोरे ढिग नहि एकहु भोगू,
देउँ कहा मोहि लागति लाज, भगिनि स्वभाव सुहायो॥
मै अरु मोर स्वयं सब तोरा, करुणा मई कहहु मोहिं मोरा,
सुनि-सुनि गिनौ भाग सिरताज, हर्षण हिय हर्षायो।

(२३८)

सिय के सदन उछाह भर्‍यो री।
भैया द्वितिया आज अनूपी, भ्रात निमंत्रण लली कर्‍यो री।
विविध भाँति व्यंजन बनवाई, परुसि जिवावन यत्न चर्‍यो री।
परुसनि चलनि मधुर मधु बोलनि, सुधा सरिस शुचि अन्न धर्‍यो री।
लक्ष्मी निधि पावत अनुरागे, नवल नेह दृग झरनि झर्‍यो री।
अवर लेहि यह आपहिं योगू, कहति सिया भल भाव ढर्‍यो री।
भ्रात भगिनि सुख सिन्धु समाये, निरखत सबके मनहिं हर्‍यो री।
हर्षण सुमिरि दुहुँन की प्रीती, चहत अबहिं भव सिन्धु तर्‍यो री।

(२३९)

आजु नेग मन मानी लहौंगी।
भैया देन कहहिं तो सुनिबी, उर उमंग जो उठति कहौंगी।

वस्त्रा भूषण देय भोराई, सो न चली चित चाह चहौंगी।
सुनि सिय बैन मधुर मुसुकाई, बन्धु कह्यो हिय वस्तु गहौंगी।
मुख प्रसन्न लक्ष्मी निधि अनुजा, बोली तव बिन कछु न सहौंगी।
गोद बिठाय प्यारि नित मोकहँ, देत रहहु सुख सुधा सनौंगी।
सुनि सुख मानि नेह भरि नयनन, अग्रज कहेउ तुमहि निबहौंगी।
हर्षण पुनि दै वसन विभूषण, चूमि मुखहिं कह हृदय रहौंगी।

(२४०)

भ्रात भगिनि की प्रीति भली।
अनुजा हित अग्रज सब वारे, भरे भाव वात्सल्य बली।
भैयहिं निरखि भगिनि सुख साननि, जिमि शिशु अम्बहि पाय पली।
बने परस्पर बहिर्प्राण दोउ, इक-इक सुख प्रद चाल चली।
बन्धु बहिन-बिनु व्यर्थहिं जीवन, जानत जग रस खाक खली।
तेहि बिन भोजन भलो न भावत, भ्रात बिना तिमि जनक लली।
लखि-लखि सुर सब सुर नव नारी, जय कहि वर्षहिं कमल कली।
हर्षण जननि जनक पुर वासी, हर्षहिं सन्त समाज थली।

(२४१)

सोहति सिय लै सखिन समाज।
सिद्धि सदन उर उमगति आई, बन्धु मिलन के काज।
लखतहिं कुँअरि ननद सनमानी, दोउ मिलि भवन विराज।
भ्रातहिं पूँछ अटा सुनि बैठे, चली सकल सुख साज।

जाय सिया भ्रातहिं प्रणाम किय, मिलनि मधुरि भल भ्राज।
श्री निधि अंक दिये बहु प्यारत, प्रिय प्रेमिन सिर ताज।
इतर पान स्त्रग चन्दन चर्ची, भ्रात भगिन कहँ याज।
आरति कीन मगन मन सिद्धी, हर्ष लखति द्वौ आज।

(२४२)

भैया मोरे तुम कस वेणु बजावहु।
सुनन हेतु मम श्रवणहु चाहत, शब्द पियूष पियावहु।
सुनि मृदु बैन भगिनि के श्री निधि, कहेव लला पतिआवहु।
तव यश सिद्धि कहहिं कर वीणा, प्रेम पगे भल भावहुँ।
चन्द्र कला मिरदंग पाणि लै, तब मैं वेणु सुनावहुँ।
सुनतहिं सबै साज लै-लै के, कही रसहिं वर्षावहु।
लक्ष्मी निधि मुख मुरली टेरे, आनँद अमित अघावहुँ।
हर्षण सिया सुखी सुधि भूली, प्रेम प्रकाश प्रभावहुँ।

(२४३)

अनुजा मोरी धरि मुख मधुर मुरलिया।
मधुरे-मधुरे राग अलापै, फेरत स्वरन अँगुलिया।
कर्ण पियूष भरहु तुम मोरे, वाद्य बजावहिं अलिया।
सुनत सिया भ्राता यश कहि-कहि, प्रेम झरत दृग नलिया।
भ्रात सहित सब कहँ सुख बोरी, वेणु बजाय बेहलिया।
आनँद-आनँद-आनँद पूरयो, सिधि के सुभग महलिया।

पुष्प वरषि सुर जयति पुकारत, तियन समेत सुफलिया।
हर्षण अग्रज अनुजा मंगल, चहत सदा बलि बलिया।

(२४४)

भगिनि भवन जब जावत भैया।
द्वार आय भेंटति अनुरागी, सिया सुभग सुख दैया।
मिलनि प्रीति किमि कहै कवी कोउ, मन वाणी नहिं जइया।
चन्दन चर्चि सुमाल पिन्हावति, निज कर गुथी सुहइया।
पान गन्ध दै मंगल गावति, सखिन सहित पुलकइया।
श्री निधि अंक बिठाय प्यारि बहु, देत भेंट बहुतइया।
कथा कहानी सुखद सुनावत, आनँद अतिहिं अघइया।
हर्षण भगिनी भ्रात परस्पर, लखि-लखि नेह नहइया।

(२४५)

सिय के अनुज चचेर पियारे।
समय-समय दर्शन हित आवत, प्यारति सिया सबहिं लव लारे।
पाइ प्यार सुख सिन्धु समावत, लली लाड़िले निमि कुल वारे।
सिय बिन सोऊ अन्य न जानत, सेवत भगिनि भाव भल धारे।
हर्षण सुखी रहत निशि वासर, तेहिं के युग पद कमल निहारे।

(२४६)

सखि गृह कबहुँ किशोरी सखिन सँग जावै।
कृपा मूर्ति करुणा करि सुखदा, परिकर प्रीति अथोरी।

तजि प्रभुता नीचहु सनमानति, सहज स्वभाव वरो री।
परम स्वतन्त्रा नेह अधीना, जन रुचि राख विभोरी।
स्वामिनि दया देखि गृह अलियाँ, करि सन्मान बड़ो री।
पूजि यथा विधि आरति करहीं, चमर सुछत्र धरो री।
शुचि संगीत सुनाय सुधा सम, आनँद उदधि उलोरी।
हर्षण करहिं परस्पर बातै, प्रेम पगी रस बोरी।

*****

श्री सीताराम विवाह

(२४७)

ब्रह्म पुत्र नारद हरि दासा।
कबहुँ अयोध्या कबहुँक मिथिला, आवत जात दर्श की आशा।
प्रेम मूर्ति हरि गुण गण गावत, लोक हितैषी जगत प्रकाशा।
वीणा ब्रह्म स्वरन आभूषित, वाद्यत सबहिं रमाय स्व भाषा।
अवध प्रसंग राम के चरितहिं, कहत भूप अरु रानि सकासा।
सुनि मिथिलेश सुनैना हर्षत, बैठि सुनति सिय मातु के पासा।
औरहुँ लोक प्रलोक की बातैं, वरणत मुनि भव भाव विनाशा।
महती पूजा पाय नृपति ते, जाहिं सिया मुख देखि अवासा।

(२४८)

आये गगन उतरि मुनि आँगन अवनी।
देखि देव ऋषि रानि सुनैना, गुनी अहौ बड़ि भागन भवनी।
परी भाव पुनि सियहिं पराई, आशिष लहि सुख पावन पवनी।
पूजि सविधि सिय पाणि देखाई, मातु पुत्रि-पति रागन रँवनी।
विष्णु सरिस गुण ग्राम अलौकिक, सियहि मिलै वर योग अयौनी।
नारद कहेउ पुजावहु गिरिजा, सुफल मनोरथ बागन बवनी।
बगिया बीच देखि जेहि पुरुषहिं, लोभि चित्त लव लागन लवनी।
सोई श्याम सुखद सिय स्वामी, हर्षण अचल सुहाग न गवनी।

(२४९)

दशरथ राज कुँअर छबि छैया।

सम्प्रति सब गुण धाम विष्णु सम, सत्य कहौं तोहिं पै मैं मैया।

सम अतिशय जाके नहिं त्रिभुवन, शोभा सिन्धु सुखद रघुरइया।

तन सम्पत्ति कहै को गाई, सत्य संध दृढ़ व्रत महतैया।

शरणागत वत्सल जित क्रोधा, सर्व सुलभ सौशील सुहइया।

सब समर्थ करुणा कृप मूरति, सर्व भूत हित आत्म अमइया।

सुर नर नाग दैत्य भट भारे, समर जितै नहिं करत उपइया।

सिय के योग कहे ऋषि नारद, हर्षण हृदय हर्ष पुलकैया।

(२५०)

जानकी रस राती मुदित मन।

गौरी पूजन करति नित्य नित, भाव भले हिय आन की।

जननी आयसु साथ सखिन के, नारद वचन प्रमान की।

षोड़स पूजि सविधि सुख रासी, चाहति वर सुख खान की।

पूर्ण काम सर्वेश्वरि यद्यपि, जनक सुता श्रुति छान की।

तदपि लोकवत लीला अनुसरि, श्री भगवति भगवान की।

भक्ति सहित कर विनय भवानिहिं, देति मान जग त्रान की।

हर्षण बड़ेन बड़ाई यहि विधि, भले भलाई भान की।

(२५१)

मुनि मुख राम चरित सुनि सीता स्वधामा।

रमति सदा रामहिं भव भूली, मन वच कर्म सुप्रीति पुनीता।

चरित चन्द्रिका चित्त चोरायो, बिन दीन्हे दर्शन हिय हीता।
राम-रोम रमि रहयो सिया के, सोइ सुखद शुचि श्याम सुप्रीता।
खात पियत अरु सोवत जागत, बैठत उठत सिया मन मीता।
चिन्ता मणि चित चोर चातुरो, चिन्ता हरण विषय चित चीता।
सरबस लियो दियो पुनि सर्वस, दो के एक भये जग जीता।
हर्षण पूर्व राग सिय केरो, मन वाणी बुधि पार अतीता।

(२५२)

हिय सालै सिया के विरह बाँकी।
मन चित बुद्धि विषय रघुनन्दन, जग सुधि कौन करै काकी।
भितरहिं भीतर विरह ऊष्मा, रही जराय जिया जाकी।
तेहि की दशा कौन कह कोविद, अनुभव गम्य हिया ताकी।
गुरुजन लाज दबावति भावहिं, बाहय वियोग न कोउ झाँकी।
तदपि शरीर खीन सम भाषत, सखिहुँ न जान यतन थाकी।
तन छाया तिमि अनुसरि अलिया, सोऊ कृशित भई ढाँकी।
हर्षण प्राण-प्राण प्रिय सीता, प्रियतम प्रेम परम छाकी।

(२५३)

सिय बैठी अकेली विरह भारी।
सात्विक भाव सकल तन प्रगटे, प्रियतम सुरति नयन वारी।
चन्द्रकलादि सखी अन्वेषण, करतहिं तहाँ गई सारी।
करि प्रणाम सीतहिं सब बैठी, सोउ सम्हारि सुधिहिं धारी।

काह भयो स्वामिनि सखि पूँछहिं, कछु नहि कह्यो मधुर स्वारी।
प्रकृतिहिं मोर अहै अस जानहु, समुझि न परै अहौ हारी।
अन्य बात अलि धरहु न हिय महँ, चिन्तन आत्म करौं या री।
हर्षण वंश स्वभाव सहज सो, अस कहि बात सिया टारी।

(२५४)

चन्द्रकला अलबेली अलिन सिरमौर।
जनक लली की प्राण पियारी, सिय सुख सुखी चहत नहिं और।
जानि गई स्वामिनि उर केरी, योगिनि चतुरि प्रीति रस बोर।
जेहि विधि सुखी होहि नृप लाड़िलि, करउँ सोइ शुचि करतव मोर।
समय पाय कर विनय सिया सों, कही वचन मधुमय मधु घोर।
पराधाम साकेत की लीला, मुनि मुख सुनी रहस्य अथोर।
सोइ अनुकरण करहिं सब सखिया, उछरै आनँद सिन्धु हिलोर।
हर्षण सखि रुचि समुझि सिया जू, दीन्ही स्वीकृति बनी विभोर।

(२५५)

लीला रस झरि झरसै लाग।
कलित कुन्ज कमनीय सिया के, सान्तानिक सुख परतम पाग।
यद्यपि सो अनुकरण चरित वर, तद्यपि सत सुख सरसत जाग।
रास रंग रमणीय रमी सब, राम रसहिं रस रमणी राग।
मन्मथ-मन्मथ मोहन मधुरहिं, ललित लखैं ललितहिं भल भाग।
भई नृत्य राघव की भेंटी, दर्श पर्श वर विरहब बाग।

सखिन सहित सुख सिन्धु समाई, सुखद सिया सुख रूप सुहाग।
हर्षण लीला विरति भए पुनि, स्वप्न भयो अस कहँ लाग।

(२५६)

समय समुझि सिय मातु सुनैना।
पति पद पकरि विनय वर बानी, बोली चतुरि चितय चित चैना।
नाथ सिया श्यामा सम दर्शत, करहि विवाह योग सुख दैना।
उचित समय कन्यहिं पितु देवै, योग वरहिं श्रुति शास्त्र सुबैना।
छमहिं प्राण पति मोर ढिठाई, उचित होय तस करहि सुभैना।
कह मिथलेश हौहुँ नित प्यारी, लखि लखि ललिहिं सोच दिन रैना।
चन्द्र कला सम अहनिशि वर्धति, निमि कुल सुधा सिन्धु प्रगटैना।
हर्षण अवशि उपायहिं सोचिहौं, गिरजा शम्भु सहाय सुहयना।

(२५७)

प्यारी तोसे कहहुँ हिये की बात।
रूप शील सुख सिन्धु किशोरी, सदगुण सदन सुहात।
शुचि स्वधर्म की मूर्ति अनूपी, सुकृत सुयश छबि छात।
छमा दया कृप करुणा आगरि, को कहि वरणि सिरात।
तेहिं अनुरुप देय विधि अनुपम, सुन्दर वर सुख दात।
तबहिं सोच संकट मम भामिनि, दूर होइ भल भात।
अवध किशोर एक मोहि दर्शत, जानहिं सो शिव धात।
हर्षण दम्पति लली विवाहन, बात करत दिन-रात।

(२५८)

करत केली किशोरी अलिन लै आज।
शिव धनु सदन परिक्रम करि-करि, छुअहिं परस्पर सखि सुख साज।
दौरत समय सिया की सारी, अरुझि धनुहिं खिसकावति छाज।
जस-जस सिया देहिं द्रुत चक्कर, तस-तस चापहु गति गृह राज।
निरखि सखी सीतहिं करि ठाढ़ी, अलग करी साटिक भय भ्राज।
सियहु तहाँ तृण जाल दूर करि, धरयो पिनाक उठाय स्व काज।
पूजि यथा विधि शाम्भव धनुषहिं, गई जननि ढिग सहित समाज।
हर्षण सुनत सुनैना नरपति, अचरज गुनि भे बिना अवाज।

(२५९)

सोचत सियहिं बारहिं बार।
श्री मिथिलेश गये धनु पूजन, अचरज उर विचार।
निरखी निज नयनन सिय महिमा, अकथ अपरम्पार।
आय सुनयनहिं खबरि जनायो, शक्ति सिय साकार।
तादृश वर अप्रमेय बलीना, ज्ञान गुण आगार।
रूप शील सुख शान्त सरोबर, चहिय श्रुति आचार।
कहा करौं कहँ जाँव कहौं केहि, एक शिव आधार।
हर्षण ध्यान धरौं तेहि केरो, शोक ते सोइ तार।

(२६०)

ध्यान बीच शिव आयसु दीनो।
मम पिनाक जो तव गृह राजत, ताकर भेद सुनहु सुप्रवीनो।

सो केवल वर ब्रह्म बुलावन, अन्य हेतु नहिं चित्तहिं चीनो।
धनुर्यज्ञ साधहु निमि भूषण, करि प्रण यथा कहु सुख भीनो।
तोरै जो कोउ चाप विशाला, लहहिं सिया जय कीर्ति सुखीनों।
इष्ट देव मम यहि मिस आई, ब्यहिहैं लली अवशि रस मीनो।
चिन्ता हरणि प्रणसि चित चिन्ता, दैहैं आनँद तुमहिं बलीनो।
हर्षण जागि भूप हिय हर्षेव, शम्भु सुआयसु शिर धरि कीनो।

(२६१)

सभा मध्य गुरुसन नृपराई।
सिय कर श्री शिव चाप उठावन, शम्भु निदेश ध्यान जिमि पाई।
निज रुचि यथा हृदय कहँ प्रेरति, सो सब सत-सत वरणि सुनाई।
सुनतहिं विप्र साधु उपरोहित, यागवलिक निमि कुल सुखदाई।
इक स्वर सबहिं कहे सोइ कीजै, जो अनुशासन शिव मुख गाई।
साधु-साधु तुम महि मिथिलेश्वर, सीता पुत्रि सुनैना जाई।
धनुष यज्ञ प्रारंभ करहु अब, सुदिन सोधि सुन्दर श्रुति-भाई।
हर्षण तनिक छिद्र नहि होवै, शास्त्र रीति सबकी सेवकाई।

(२६२)

धनुष यज्ञ मिस सिया स्वयंवर।
देश-देश महँ खबरि पठाये, निमि कुल भूप स्वयं शुचि सुख कर।
ऋषि मुनि संत निमंत्रित कीन्हे, यत्र-तत्र वासी या जग चर।
एक वर्ष निर्धारित धनु मख, स्वागत साज सबहि विधि सुन्दर।
रंग भूमि भलि भव्य रचायो, अनुपम अकथ सुनेत्र सुखद तर।

जेहि विलोकि विधि विस्मय पावत, औरन काह कथा कह भूपर।
आवहिं तहँ अवनी पति अगणित, पावहि सुठि सतकार यथा नर।
यहि विधि चलत यज्ञ पुर हर्षण, निरुपम अरु निर्विध्न भाव भर।

(२६३)

लक्ष्मी निधि श्री सिद्धि समोऊ।
प्रीति पगे श्री भगिनी सिया के, चर्चा करहिं परस्पर दोऊ।
सिया योग नृप कुँअर एक जग, दशरथ अजिर विहर रस बोऊ।
जो वह आय इतै धनु भंजै, मेलहि माल लली दृग जोऊ।
तो कृत कृत्य होंहि धनि भूपर, रहहिं रसे अहनिशि सुख सोऊ।
भाम भगिनि की सुन्दर जोरी, निरखि नयन सब स्वत्व बिलोऊ।
सुर नर नाग लखत मम भागहिं, सदा सिहैहैं निजहिं विगोऊ।
हर्षण सुफल मनोरथ सत सुख, ईश कृपा ते कह सब कोऊ।

(२६४)

प्यारी तोसे कहउँ हृदय की बात।
मोसे कहे यथा शशि भाला, मधुर-मधुर मुसुकात।
तिहरो भाम राम रघुनन्दन, इष्ट देव मम जात।
आये समय अवशि सिय परिणय, करि हैं सब सुख दात।
प्रीति रीति जानत जन केरी, सुखकर श्यामल गात।
सदगुण सदन मदन मद मर्दन, शोभा सिन्धु सुहात।
सोइ अशीष सद्गुरु सत दीन्हो, तथा शम्भु भल भात।
अति रहस्य हर्षण अभिवार्ता, कहेउँ तुमहि रस रात।

(२६५)

कब होइहै मिलनमा मोर, उर ते उरहिं लगा।
जय रघुराज पुण्य अवतारी, चन्द्रकीर्ति रस बोर।उरते।
हरिहौ ताप विरह की मोरे, मुख ते मुख को जोर।उरते।
जनक सुवन की आर्त पुकारहिं, सुनलो राजकिशोर।उरते।
हर्षण हिय अब धीर न धारै, करौं उपाय करोर।उरते।

(२६६)

हृदय हरण प्रिय चित्त चोर छबि छाये।
स्वप्न बीच कौशिक मुनि साथहि, जनक पुरी कहँ आये।
कमल नयन सुख राशि अनूपम, लखन बन्धु सँग लाये।
कोटि काम कमनीय माधुरी, सुठि सौंदर्य सुभाये।
मिलै मोंहि नहीं कहत बनै सुख, रहे हृदय लपटाये।
हर्षण श्रीनिधि सुरति स्वप्न की, करत सुधिहि बिसराये।

(२६७)

प्यारे मोरे जियहु भगिनि के प्यार।
सिय सुख निज सुख सत-सत जानत, तेहिं रुचि स्वरुचि विचार।
गुप्त चरित मोते प्रभु वरणे, यह तव कृपा उदार।
पितु घर हौंहु रही जब बाला, मुनि मुख कैयक बार।
सिया-राम संयोग सुने सत, श्रवण सुखद रुचि कार।
नाथ सहित सिय सुयश श्रवण सुनि, हर्षेउ हृदय अपार।

मन ते अरपि आपु कहँ अपनो, सब विधि भई तुम्हार।
हर्षण भाग्य भली जग उचरै, रउरेहिं रघुवर सार।

(२६८)

सीय स्वयंबर जानि तयारी।
प्रमुदित होहिं सकल पुरवासी, जानि सियहिं निज आत्म अधारी।
सुत वित नारि भवन ते सीता, सुख प्रद सब कहँ प्राण पियारी।
तेहिं सुख सुखी सबहिं जन देखियत, मन क्रम वचन स्व सरबसवारी।
रूप शील गुण सिन्धु शिरोमणि, राज कुँअर वर चहत जिया री।
देवी देव मनावत अहनिशि, सिय सौभाग्य मनाय अपारी।
करत विचार दहिन अँग फरकत, होंहि सुखी मन मोद महारी।
हर्षण मिथिला मगन मनहिं मन, पुलकहिं देखि लली सुकुमारी।

(२६९)

मिथिला भाग कहै कवि कोरी।
आदि शक्ति सीता जहँ जन्मी, सकल शक्ति सिरमौरी।
चहल पहल चहुँ दिशि छबि छायो, कीन पुरी चित चोरी।
रंग भूमि लखि अनत न जावत, नयन फँसे जग छोरी।
आवत जात नरेन्द्र अवनि के, लखत शम्भु धनु घोरी।
विप्र साधु सुर पूजा पावत, ऋषि मुनि सेवन हो री।
जन समूह पुर भीतर बाहर, समारोह सुख शोरी।
धनुष यज्ञ परिणामहिं हर्षण, लखन चाह जिय जोरी।

(२७०)

गाधि तनय कहँ स्वप्न दिये हैं पार्वती शिव शंकर भोले।
मख रक्षा के हेतु सिधावहु, अवधहिं आप अवशि मुनि-मौले।
राम-लषण दशरथ ते मागी, आवहिं आश्रम द्वौ सुत को ले।
करि निशिचरी निशाचर नाशहिं, दैहैं तुम कहँ सुयश अतोले।
तिनहिं लिवाय जाय मग मिथिला, मुनि तिय तारहिं राम अमोले।
धनुष भंजि श्री सीतहिं ब्याही, सुख को कोष लुटवाहिं खोले।
यहि विधि रामहिं सीय मिलावो, पूर्ण-पूर्ण मिलि हिय रस घोले।
हर्षण तबहिं जगत कल्याणा, जानहु जियहिं सदा शिव बोले।

(२७१)

चक्रवर्ति श्रवण सुने गाधि तनय आये हैं।
विप्र साधु सचिव संग मिलन हेतु धाये हैं।
दर्श पाइ हर्ष हीय, पगनि परे प्रेम जीय,
अश्रु बहत पाणि पकरि, आसनहिं बिठाये हैं।
चरण धोय शीश लीन्ह, पूजा षोडष सो कीन्ह,
तिया तनय द्रुतहिं लाय, पायन में पराये हैं।
निरखि वदन श्याम सुधा, कोटि चन्द्र लगत मुधा,
नयन वारि मुनिहु छाय, मोहन में मोहाये हैं।
भोजन करि भाँति-भाँति, पौढ़े मुनि हृदय शान्ति,
भूप भले भाव भरे, पाद को दबाये हैं।

नृपति कहे भली भाग, धन्य भयो जगत जाग,
जो पै ऋषि राय आय, पावन बनाये हैं।।
स्वामि नाथ सहज आय, दियो दर्श क्लेश पाय,
याकि कहैं कोई काम, लैके सिधाये हैं।।
आयसु को पाय दास, करै वेग दै सुपास,
हर्ष अर्पि सबहिं चरण, सेवचित्त लाये हैं।।

(२७२)

राजन राम लषण मै पाऊँ।
करत यज्ञ निशिचर मोहिं त्रासत, भ्रष्ट करत सब ठाऊँ।
तिहरे सुवन जाइ तिन्ह नसि है, ऋषि कुल सुखी बनाऊँ।
सुनत नृपति मन मौन भये द्रुत, काटे रुधिर न घाऊ।
सात्विक भाव उदय तन सिगरे, राम विरह भय भाऊ।
तहँ वशिष्ट बहु विधि समुझाये, सुकृत सुयश सुख दाऊ।
कौशिक मिस वर वधू सुयोगहिं, विद्या प्राप्ति बताऊ।
सुनत नृपति गुरु आयसु मानी, देन कहे सुत चाऊ।

(२७३)

राम लषण दोउ बन्धु बोलाई।
शीश सूँघि सौंपे मुनि राजहि, सीख सिखय दृग वारि बहाई।
कहेउ लेहिं मम नयन पुतरिया, यज्ञ कराय दियो पहुँचाई।
गुरु पितु मातु सबै प्रभु इनके, रखिहैं पलक पुतरि सुखदाई।
बाल स्वभाव करहिं जो अनुचित, छमिहैं कृपासिन्धु ऋषि राई।

गृह ते गवन कियो नहिं कबहूँ, सुठि सुकुमार सुधा सरसाई।
प्राण-प्राण मम राम रमै मन, तिन बिन दुखद दिवस मोहि साईं।
अस बिचार अपराध छम्यो प्रभु, हर्षण दोउ कर मंगल गाई।

(२७४)

कौशिक संग चले रघुवीर।
विप्र धेनु सुर संत सम्हारन, हरण भूमि भव भीर।
मातु पिता गुरु बन्धु सखन कहँ, हियहिं बँधाय के धीर।
राम लषण दोउ धनुशर लइकै, कटिहिं कसे तूणीर।
गवनत मग मोहत मन सबके, निरखत बन सरि तीर।
लखि लखि विबुध सुमन झरि लावत, जय-जय कहि सुख सीर।
प्रभु ब्रह्मण्य मातु पितु तजि कै, जात हर्ष हिय हीर।
गाधि तनय निज भाग सराहत, विशद बृहद गंभीर।

(२७५)

ताड़ुका मग महँ दशर परी।
गुरु निदेश शर लक्ष्य कियो प्रभु, प्रथम प्रहार मरी।
पुष्प वरषि सुर जयति पुकारे, अधमाधमहु तरी।
मुनि हिय मेलि परम सुख पाये, दोउ दृग नेह झरी।
अस्त्र कृशास्व बला अति बलहू, विद्या रहस भरी।
अति प्रसन्न दीन्हेउ तहँ मुनिवर, सो सब राम वरी।
सुख सह आश्रम आनि सुआतिथ, किये सुप्रेम करी।
हर्षण राम लषण लखि जाने, पुण्य सुबेलि फरी।

(२७६)

राम लषण रुचिहिं पाय, गाधि तनय यज्ञ ठाने हैं।
होम को सूधूम देखि, मारीच सुभुज अनखाने है।
सेन साथ आये दौरि देखि, राम धनुहिं ताने हैं।
बिना फरहिं बाण मारीच को, पार उदधि उड़ाने हैं।
अग्नि बाण छोड़ि बहुरि, सुबाहु यम पुर पठाने हैं।
शेष दैत्य नाशि लषन, यज्ञ पूर्ति हिय हुलसाने हैं।
देखि-देखि देव सुमन वर्ष, जय जयति बखाने हैं।
हर्ष हृदय हर्षि-हर्षि, कीर्ति कहत मन मोहाने हैं।

(२७७)

मुनियन भय हरण हार, सुर गण सुखकारी।
जय-जय दशरथ कुमार, चन्द्र कीर्ति सुधा सार,
भूमि भार हरण हेतु, लीला विस्तारी॥
धनि-धनि महिमा अपार, पंच वीर अति उदार,
विप्र धेनु सन्त जनन, सेवत सुख सारी॥
जय-जय सदगुरु अगार, अवनी ब्रह्मावतार,
प्रगट दिखत भक्ति विवश, प्रेमिन पथ चारी॥
दुष्ट दैत्य दल विदार, कौशिक मख को सँभार,
अभय कियो हर्ष देव, स्तुति अनुसारी॥

(२७८)

कछु दिन रहे तहाँ रघुरइया।
प्रीति पगे प्रिय आश्रम वासी, नयन लाभ लेवत सुख दइया।
तेहिं औसर तहँ इक द्विज आयो, जनक निमंत्रण दै सिर नइया।
कौशिक संकल वृतांत सुनायो, राम लखन सुनतहिं सुख पइया।
धनुष भंग सुनि गाधि तनय सह, मिथिलहिं चले हृदय हर्षइया।
देखत गिरि वन सरित सुआश्रम, नगर गांव पुर अति रुचि रइया।
कौशिक कहत कथा इतिहासिक, सुनत बन्धु सह राम रमैया।
हर्षण राजकुमार निरखि मग, हर्षत सिगरे लोग लोगइया।

(२७९)

शिला सु तिय को रूप धरी।
सहजहिं जात चले मग रघुवर, चरण रेणु पाषाण परी।
श्राप विवश मुनि तिया अहिल्या, पाप सिन्धु ते तुरत तरी।
जड़ ते भई दिव्य वर नारी, राम चरण गहि भाव भरी।
स्तुति कीन्ह विनय बड़ि बानी, लागी नयनन नेह झरी।
अति प्रसन्न ह्वै अविरल प्रेमहिं, दिये दीन गुनि हर्षि हरी।
गौतम पहुँचि सविधि सतकारे, रामहु कीन प्रणाम ढरी।
गौनों सो करि गये ऋषिवर, हर्ष कौशिकहु पथहि चरी।

(२८०)

पद-रज परम प्रताप अहो रे।
जासु परस ते तर्‌यो पषाणहु, वपुष सुन्दरी नारि लहो रे।

वर्षत सुमन देव जय उचरत, रघुवर कीर्तिहि गाय कहो रे।
अचरज अवनि गिने सब कोऊ, प्रभु महिमा कह महत महो रे।
मुनि तिय चरण परी अतुराई, तन मन प्रेम प्रवाह बहो रे।
स्तुति करि पद प्रेम को पाई, अविरल अचल अनंत चहो रे।
धन्य-धन्य सब कहहिं ताहि को, बिन श्रम भव दुख दाह दहो रे।
हर्षण हर्षि गई पति लोकहिं,जीवन फल तन अछत गहो रे।

(२८१)

गुरु के वचन गरु-गरु जानी।
सिर नत किये धर्म धुर रघुवर, हृदय अधिक सकुचानी।
जाइ पषाणहि पद रज दीन्हे, प्रगट भई ऋषि-रानी।
परी चरण हरि के अति आतुर, बहत दृगन बहु पानी।
स्तुति करि लै भक्ति विमल वर, पाय पतिहिं सुख सानी।
सुर मुनि अरु नर नाग प्रशंसत, जय-जय राम बखानी।
चरण छुआय शिलहिं पछितावत, प्रभु ब्रह्मण्य महानी।
लखि स्वभाव कौशिक हर्षाये, समुझाये हिय आनी।

(२८२)

हे दीन बन्धु दयाल राघव, जयति मुनि तिय तारिणम्।
भव सिन्धु तारक पाद पोतक, दुःख दोष निवारिणम्।
ऋषि नारि शैली पद रजहिं, पूत कृत सुख सारिणम्।
सुठि सुन्दरी किय तिय शिरोमणि, जयति जय धनु धारिणम्।

बिनु हेतु राम कृपाल केशव, नाथ जन मन रन्जनम्।
धनि धन्य लीला सुख सुसागर, भक्त भल चित चन्दनम्।
विधि शम्भु सेवित चरण कोमल, जनकपुर पथ गामिनम्।
सुर पुष्प वरषत जयति उचरत, हर्ष हिय के स्वामिनम्।

(२८३)

पहुँचे निमि के नगर कुमार।
हृदय हर्ष नयनन सुख पावत, सुख कर पुरी निहार।
देखत ललकि तदपि जिय ललचत, लोचन अनत न टार।
प्रेम पगे सुधि भूलि स्वेद बह, लछमन करत बयार।
प्रीति पुरातन सिया रमण की, अकथ अगाध अपार।
लखतहिं श्वसुर पुरी सुख रूपी, उदित भई बरिआर।
चेत पाय पुनि हर्ष लखत दृग, सुन्दरता सुख सार।
मोहन मन मोहकता वर्णत, सुनत लषण बुधि वार।

(२८४)

भैया लखन विदेह पुरी की सुन्दरता सुख बोर।
लोचन लखत लुभायो जियरा, क्षण-क्षण होत विभोर।
मिथिला महल दिव्य द्युति कारी, जिमि शशि सूर्य लोक उजियारी,
मरकत कनक-मणिन मय मोहत, मुनियन को चित चोर॥
सर सरि वन उपवन वर बागा, हृदय हर्ष उमगत अनुरागा,
पपिहा कीर केकि कल कोकिल, मधुर मचावत शोर॥

पुर परिकोट मनहुँ पग रोपी, रक्षत आभा अनुप अलोकी,
ध्वज पताक फहरत नभ सोहत, सुयश वितर चहुँ ओर।।
श्रवण सुखद धुनि पंच सुहाई, निशि दिन रहत गगन महँ छाई,
व्यौम विमान विपुल मेड़रावत, वर्षि सुमन सुर लोर।।
ऋषि मुनि संत नृपति नित आवै, विपुल सु वृन्द कवी को गावैं,
धनुष यज्ञ फल निरखत नयनन, लगी नारि नर डोर।।
पुरी विलोकि विधिहु चित छोभत, निज करनी नहिं कतहुँ विलोकत,
हर्ष मदन मन मोहन मोहेव, कहा कहौं मन मोर।।

(२८५)

कौशिक मग जोहत महराजा।
श्री मिथिलेश मनहिं मन चिंतत, कब अइहैं ऋषि राजा।
जनक सुवन तेहिं अवसर आये, करि प्रणाम भल भ्राजा।
पाणि जोर बोल्यो कछु सकुचत, जेहिं चिन्तहिं पितु आजा।
गाधि तनय सँग राज कुँअर द्वै, उपवन आय विराजा।
यागवल्क गुरुदेव अबहिं मोहि, कहेउ निरत निमि काजा।
सुनत जनक सुख सिन्धु समायो, जो ज्ञानिन सिर ताजा।
हर्षण पुत्रहिं कहेउ मिलन हित, करु प्रबन्ध सुख साजा।

(२८६)

मिलन हित मुनिवर के नृप जात।
संग सुवन शुचि सचिव सुभट लै, भू सुर संत जमात।
संत दरश की आस हृदय बिच, उमगति सुख सरसात।

जाइ निकट निरखे ऋषि राजहिं,, किय प्रणाम पुलकात।
द्रुत उठाय कौशिक उर मेले, प्रीति रीति रस रात।
पुनि-पुनि कुशल पूँछि मिथिलेशहिं, बैठायो गहि गात।
जनक सुवन अरु सकल समाजहु, बन्दि मुनिहिं प्रणिपात।
आशिष पाय बैठि तहँ हर्षण, नहि लखात युग भ्रात।

(२८७)

तेहिं अवसर दोउ राज कुमारे, मन मोहन चित चोर पियारे।
कोटि-कोटि कंदर्प दर्प दल, आये छबि आगारे।
परम प्रभाव तेज लखि तिन की, उठी सभा सब वारे।
करत प्रणाम पकरि बैठाए, मुनिवर परशि दुलारे।
राम लषण लखि मिथिला वासी, सुधि बुधि सकल बिसारे।
सात्विक चिन्ह सकल तन प्रगटे, वारि विलोचन ढारे।
श्री विदेह की दशा कहै को, बहे नेह नव धारे।
गुप्त प्रेम प्रगट्यो हठि हर्षण, लखत श्याम सुख सारे।

(२८८)

सहज विरागी भूल विराग, बनि चकोर चन्दा मुख राग।
ज्ञान योग वैराग सदन कहँ, राम रूप की आग।
फूँकि दियो कहुँ खोज न पावत, इत-उत भटकत बाग।
प्रेम पगे नृप निरखत रामहिं, ब्रह्मानंदहु भाग।
जौ लौ राम रूप नहिं निरखै, श्याम सुखद रस पाग।
तौ लौं ब्रह्म विचार भले भल, करै जगत ते जाग।

तनिक लखत रघुनाथहिं भागत, वर वेदान्त अदाग।
हर्षण सोइ भयो मिथिलेशहिं, रमें रूप अनुराग।

(२८९)

मुनि मैं अपनो सकल गमायो।
गद्-गद् बैन धीर धरि भूपति, विनय करत अतुरायो।
युगल कुमार निरखि निज नयनन, ज्ञान विराग भुलायो।
हिय अनुराग उदधि बहु वर्धत, ब्रह्मानन्द बिहायो।
जिमि चकोर चन्दहिं तिमि बरबस, मन चित बुधिहु लुभायो।
कहहिं नाथ ये ऋषि कुल नृप कुल, कौन कहाँ ते लायो।
परम तत्व परमारथ की धौं, युगल रूप धरि आयो।
हर्षण सहज प्रीति द्वौ केरी, अकथ अलौकिक भायो।

(२९०)

नृप तुम सिगरो सरबस पायो।
पर परमार्थ स्वरूप सत्य सत, मुनिन मते जग जायो।
जो कछु कहहु साँच जिय समझहु, ये सुख सिन्धु सुहायो।
प्राणि मात्र जड़ चेतन यावत, सबहिं प्राण प्रिय भायो।
यागवल्क के कृपा प्रसादहिं, जानहु जेहि हित आयो।
अवध नृपति दशरथ सुत दूनहु, मुदित माँग मैं लायो।
मम मख पूर किये हनि निशिचर, शिला सुतीय बनायो।
धनुष यज्ञ देखन हित हर्षण, प्रेरि इतै लै आयो।

(२९१)

श्याम राम गौर लखन लोने हैं।

मदन औ मयंक कोटि-कोटि वारि जात,

सुमुख सुधा सिन्धु नृपति छौने हैं।

देखि-देखि कै मुखार्विन्द भूप भले,

प्रीति पगे देह सुरति खोने हैं।

कौशिकहिं प्रसंसि पुनि शीश को झुकाय,

पुरहिं चलन हेतु विनय बोने हैं।

प्रमुदित गाधि तनय आयसु को पाय नृप,

चले हैं लिवाय सुखद भौने हैं।

राज ठाट ते सुहात बाट सुभग सुठि,

किये हैं सवारी रथहिं सोने हैं।

उत्सव अनूप साथ जात मुनिहिं देखि,

सुरहु सुमन झरें त्रिविध पौने हैं।

हर्षण हिय हर्षि भूप औ कुमार कलित,

राम लखन लखि सुख अनहोने हैं।

(२९२)

राज सदन सब भाँति सुहायो सोहनमा।

तहाँ वास लै दीन महीपति, नृप सुत मुनि मन भायो।

सबहिं प्रकार सुखद सब कालहिं, अनुपम त्रिजग न पायो।

सहित सुरन विधि विस्मय दायक, को कवि वरणि सिरायो।

षोडष पूजि सविधि सतकारी, नरपति विनय सुनायो।
कुँअरहि राखि सेव महँ मुनि के, आयसु लै गृह आयो।
लक्ष्मीनिधिहि पाय सुख साने, राम लखन पुलकायो।
हर्षण सखा पुरातन लखि-लखि, दोउ नृप कुँअर लुभायो।

(२९३)

नगर विलोकन राज कुँअर आये।
मुनिवर आयसु पाय मुदित मन, लोचन लाभ देन अतुराये।
गज रथ किये सवारी सोहत, जनक सुवन सँग आनँद पाये।
सुख के सिन्धु मदन मन मोहन, सुषमा सीम अतुल छबि छाये।
नख शिख सुभग सिंगार सुशोभित, जड़ चेतन के चित्त चोराये।
बालक युवा वृद्ध नर नारी, सुनतहिं जैसेहि तैसेहिं धाये।
निरखि-निरखि मधु मई माधुरी, देह गेह सब सुरति भुलाये।
हर्षण सरबस वारि स्वत्व निज, अपलक लखत सनेह समाये।

(२९४)

आली लखो रस रूप सलोना।
कोटि काम कमनीय कान्ति कल, शशि शत सुखद रसहिं रस बोना।
चितवनि चारु सबहिं चित चोरत, मुसकनि मधुर अधर अति लोना।
केशर खौर भाल भल चन्दन, कलित क्रीट रवि तेज सुहौना।
अलकावलि कुंचित कल कारी, अतर भरी जिमि नागिन छौना।
कुण्डल कान कपोलहिं लहरत, जनु युग मीन केलि रस भौना।
नासा मणि की डुलनि कहर करि, पियति अधर रस सुख सरसोना।

हर्षण स्व वस कियो पुर मिथिला, मारि मधुर मधु रूप को टोना।

(२९५)

रसहिं रस वर्षै पियहु सखी री।
सुख सुषमा श्रृँगार माधुरी, सरिता उमँगि चली री, मधुर मधु सरसै।
नख शिख सुभग मूर्ति मनहारी, अनुपम अतिहिं भली री, हरत हिय हर्षै।
इन्द्र नीलमणि स्वर्ण सम्हारी, मन बुधि पार ढली री, चषन चित कर्षै।
विधि हरि शम्भु काम की शोभा, लखतहिं लजत टली री, लखन सोउ तरसै।
शशि शत कोटि सुधा ते पूरी, सुखद सुभग सबली री, प्राणप्रियदर्शै।
आनँद-आनँद-आनँद आली, निमिपुर नवल थली री, महामुद घरसे।
हर्षण हिय के हार कुँअर दोउ, परतम प्रेम पली री, चहत चित परसै।

(२९६)

लखो री लुभावने ये बरबस मोहे मन को गोरी।
श्याम गौर सुकुमार किशोरा, मन्मथ मोहन जन मन चोरा,
छबि छिटकाय चलत चहुँ ओरा, कैसी है ये अनुपम जोरी।
क्रीट मुकुट शिर सुभग कपोला, तापर कुंडल करत किलोला,
मधुर हँसनि मधुमय मृदु बोला, शोणित अधर अमिय रस बोरी।
चितवनि चारु सुधा वर्षाई, किये स्वबस पुर लोग लोगाई,
नख शिख सुभग सु मोहकताई, कीन्हे सब के चित की चोरी।
सिय के योग श्याम सुखकारी, सुन्दर वर निज मनहिं विचारी,
विधि ते विनय करौ सखि सारी, हर्षण हिय अभिलाषा मोरी।

(२९७)

ये हैं राम रसिक रघुनन्दन री।

जनक जननि दशरथ कौशिल्या, जायो तप करि प्रेम प्रवल्या,
श्याम सुखद जग वन्दन री।

मुनि मख राखि निशाचर मारे, सुर नर मुनि सब भये सुखारे,
मेटि दिये दुख द्वन्दन री।

पद रज पूत अहिल्या कीनी, वर्षि सुमन सुर स्तुति कीनी,
जय-जय जन जिय चन्दन री।

गौर किशोर सुमित्रा शुचि सुत, वीर बाँकुरे बलहु अपरमित,
नाम लखन सुख कन्दन री।

लक्षण धाम राम-प्रिय प्राणा, बन्धु प्रेम नहि जाय बखाना,
मधुमय मुसकनि मन्दन री।

धरे चाप सायक तूणीरहि, रण संमुख कोउ धरत न धीरहिं,
चन्द्र कीर्ति स्वच्छन्दन री।

हर्षण भूप भली विधि जानत, विविध भाँति सादर सन्मानत,
लक्ष्मीनिधि सँग नन्दन री।

(२९८)

धनुष कराल कठोर सखी री।

किमि तोरिहैं सुकुमार साँवरो, संशय सबहिं दिखात झखी री।

सिरस सुमन वज्रहिं किमि वेधै, जिमि मराल नहि मेरु रखी री।

सब प्रकार असमंजस आली, विधि करतूत न जाय लखी री।

निज प्रण नृपति भूलि नहि तोड़िहैं, सत्य संध शुचि सुकृत भखी री।
मधुर-मधुर मन मोहन लखि-लखि, बरु पछितैहैं हृदय अखीरी।
नयन विषय करि रामहिं धाता, दीन्ह सबहिं आनन्द चखी री।
हर्षण सिय को नाह बनाबै, तो कृत कृत्य सुहाहिं सखी री।

(२९९)

वीर बाँकुरो राज कुमार।
हनि मारीच सुवाहु दैत्य दल, अभय कियो मुनि झार।
पद रज परशि पषान पूत भो, बनि गौतम प्रिय नार।
सुठि सुकुमार ललित लघु लोने, कोटि काम मदगार।
तदपि भंजि शिव चाप गरुअतम, ब्यहिहैं सिय सुख सार।
यह परतीत हृदय रखु आली, वचन न मृषा हमार।
जेहि विरञ्चि रचि सियहिं सम्हारेव, सोइ सत राम विचार।
हर्षण सुनत सुधा सम बानी, हर्षहिं तिया अपार।

(३००)

वर्षहिं सुमन नगर नागरियाँ।
करि उद्देश्य राम रघुवीरहिं, चितवहिं चतुरि गुणन आगरियाँ।
प्रीति रीति पहिचान मुसुकि मुख, निरखत श्याम सुभग आटरियाँ।
लखि-लखि मिथिला वाम प्रहर्षहिं, पूजहि नेह नयन गागरिया।
जहँ जहँ जात कुँअर दशरथ के, तहँ तहँ परमानँद पागरिया।
डगर डगर प्रति जगर-जगर जग, धूम मची पुर सुख सागरिया।

कहर-कहर कर हृदय सबहिं को, ज्ञान भवन भे रस आकरिया।
हर्षण प्रेम प्रवाह बहे सब, जड़ चेतन जग ते जागरिया।

(३०१)

रंग भूमि देखत रघुवीर।
उतरि यान ते पाव पयादे, विहरत महि मति धीर।
लक्ष्मीनिधि भल भाँति दिखावत, रचना अति गंभीर।
पुर बालक आये तहँ अगणित, प्रेम विवश प्रभु तीर।
कृपा कोर ते चितय परश दै, करत बात दोउ वीर।
मनहर झाँकी झाँकि हर्ष हिय, सब शिशु सुषमा सीर।
आनँद सिन्धु मगन मन भूले, पुलकत सुभग शरीर।
नेह निरखि हर्षण सुख धामहु, सुखी भये दृग नीर।

(३०२)

रंग भूमि विहरत नृप वारे।
राम लषण सुकुमार सुभग तन, सुन्दर वेष सम्हारे।
हिय के हरण मदन-मन मोहन, रूप गुणन उजियारे।
छबि छिटकाय रहे सब ओरहिं, बिखरि प्रकाश पियारे।
जेहिं ते सोह अधिक मख भूमी, भल गृह दीपक पा रे।
पुर बालक सँग-सँग महँ डोलत, सम वयस्क रिझवारे।
देखत फिरत प्रशंसत बहु विधि, रचना नयन निहारे।
हर्षण श्री निधि कहत कृपा तव, जो लखि होहु सुखारे।

(३०३)

जनक सुवन अनुराग भरे।
बैठे रथहिं पुरी दिखरावत, मधुर वचन मधु रसहिं झरे।
चितवनि चारु मुसुकि नव नेहन, राम लखन निज वशहिं करे।
निरखि–निरखि रघुवर सुख पावत, हरषि पुरातन प्रेम ढरे।
वरणत नगर निकाई अनुजहिं, सुनि–सुनि सोउ सुठि सुखहिं चरे।
पुर बासिन की भीर कहै को, वर्षहिं सुमन सुदेव हरे।
बजत वाद्य उत्सव भरि पूरो, चहुँ दिशि सुख सरि उमँगि परे।
हर्षण जय–जयकार करत सब, ललित लखत नर नारि खरे।

(३०४)

सदन सुनैना जू के रघुवर आये।
करि वर विनय नेह नव साने, लक्ष्मीनिधि निज सँग में लाये।
मातु मुदित उठि आरति कीनी, प्रेम वारि दोउ दृग में छाये।
भरि वात्सल्य विविध सनमानी, सुत की प्रीति प्रतीति सुभाये।
श्री निधि बहुरि गये निज सदनहिं, राम लषण लै चित में चाये।
सविधि किये सतकार सिद्धि सह, नेह नीर हिय में हर्षाये।
देखि प्रीति भल भाव विविश ह्वै, रामहु उर में अतिहि अघाये।
हर्षण युगल भूप के छौने, प्रेम पुरातन दिय दरशाये।

(३०५)

गाधि तनय भय रघुवर खात।
श्री निधि सहित चले मुनि वासहिं, गुरु निष्ठा दरसात।

जानि बिलम्ब त्रास मनमाहीं, भय भयदहु सकुचात।
जाय प्रणाम किये पद पौढ़ी, देखि स्वभाव सुहात।
मुनि उठाय निज हृदय लगाये, नेह नयन पुलकात।
दै अशीष निज निकट बिठाये, पूँछे पुर कुशलात।
हृदय हर्ष सुख धाम सुनाये, मधुर-मधुर बतरात।
हर्षण प्रेम पुरी धनि मिथिला, अचरज दायक धात।

(३०६)

समय समुझि सुख ते ऋषिराज।
रामहि कहेउ बुझाय प्रात ही, अन्तः बगिया आज।
जाय शिवा शिव मूरति देखैं, ध्याइ होंहि कृतकाज।
परम मनोहर रम्य वाटिका, नयन लखहिं सुख साज।
गुरु निदेश लहि हर्षित गवने, लखन सहित रघुराज।
प्रथम जाय पूजे गिरिजेशहिं, भक्ति भाव भल भ्राज।
चन्द्र मौलि प्रगटे सह गौरी, जय-जय रघुवर गाज।
हर्षण करि प्रणाम दाशरथी, स्तुति किय सिरताज।

(३०७)

प्रेम मगन भे भोले।
प्रभु स्वभाव लखि धन्य-धन्य कहि, जयति-जयति जय बोले।
विधि हरि हम नहिं पावहिं तिहरो, अन्त अनन्त अमोले।
यथा काछ नाचहु तस रघुपति, तव करनी को तोले।

जनहिं बड़ाई देन स्वभाविक, अपनो सर्वस खोले।
मम उपचार डरहु नहिं नेकहु, अब पिनाक को ले।
भंजि जनकजा पाणि ग्रहण करि, जाहिं अवध रस घोले।
अस कहि अंतरधान भये हर, हर्षण हर्षित होले।

(३०८)

राम लषण दोउ बन्धु उदार, भूप बाग बिच विहरैं।
श्यामल गौर छटा छहरावत, रस की धार वृहद वर्षावत,
अनुपम अकथ अलोक अपार। भूप बाग बिच विहरैं।
जाँय जहाँ तहँ माला कारी, गिरिजा बागहि रक्षन वारी,
गिरहिं भूमि लखि श्याम कुमार। भूप बाग बिच विहरैं।
प्रेम विवश सुधि रही न काहू, मूर्छित अवनि परी बिन चाहू,
नेह नहाई मिथिला नार। भूप बाग बिच बिहरैं।
जहँ तहँ लखि-लखि मालिन जाई, शिर नत किये चलहिं दोऊ भाई,
हर्षण शील सकुच आगार। भूप बाग बिच बिहरैं।

(३०९)

विधि सँयोग तेहि अवसर आई।
अलिन साथ लै जनक किशोरी, गिरिजा पूजन जननि पठाई।
भूषण वसन सजे अँग अंगहिं, रती रमोमा शार्द लजाई।
गावहिं गीत सुखद पिक बयनी, मधुर-मधुर वर वाद्य बजाई।
छत्र चमर छहरत सिय ऊपर, शोभा सिन्धु वरणि नहिं जाई।

मन्द-मन्द महि चलत सखिन सँग, नखत बीच शशि पूर्ण सुहाई।
पाँवड़ पड़े पुष्प भरि कोमल, अतर सिंचि वर बीथि बनाई।
हर्षण तबहुँ सखी भय खावहि, पद न चुभै कहुँ सुमन सुभाई।

(३१०)

गावो गावो री सहेलियाँ मंगल मंगल।
जनक लड़ैती मंगल मधुमय, मंगल मंगल मेलियाँ।
मंगल देखहिं मंगल पर्शहिं, मंगल करि करि केलियाँ।
मंगल श्रवण सुमंगल सूँघहिं, मंगल रसना भेलियाँ।
पूजहिं सब मिलि गौरी गणपति, इहै चहैं चित चेलियाँ।
सिय अनुरूप सुभग सुख सागर, दूलह मिलै नवेलियाँ।
जस सर्वाङ्ग सिया सुख रासी, छबि की सिन्धु अकेलियाँ।
हर्षण हिय अभिलाष जनावहिं, सिय पद धरत हथेलियाँ।

(३११)

अलबेली अलिन बिच जानकी।
नखत बीच शुचि शारद शशि सम, सुख सुषुमा छबि खान की।
झर-झर अमृत चुअत धरणि पै, रसमय रसद प्रमाण की।
मधुर प्रकाश बिखेरति सुख प्रद, अकथ अलौकिक आनकी।
नख शिख सुन्दर वसन विभूषण, आभा अतिशय भान की।
रती रमोमा शारद शचि सब, लाजहिं लखि प्रिय प्राण की।

सुर तिय सुमन वरषि नभ ऊपर, नाचहिं गुण गण गान की।
हर्षण जात चली गृह गिरिजा, निमि कुल सुता सुहान की।

(३१२)

मज्जन करि सिय सहित सहेली मुदित मन।
चलै भवानी भवन भली विधि, पूजै उमा नवेली।
षोडष भाँति भाव भल भरि-भरि, स्तुति करि मन मेली।
हर्षण निज अनुरूप वरहिं को, चहैं चतुरि अलबेली।

(३१३)

पूजै सिय सुकुमारि, गौरी गिरी की जाता।
भक्ति भाव सम्पन्न जनकजा, प्रेम मूर्ति रस रूप मधुरजा,
स्तुति पुनि अनुसारि।
गिरिजा चरण स्वशीश झुकाई, नेह नवीनी तन पुलकाई,
विनवति विरद विचारि।
निज अनुरूप सुभग वर माँगी, प्रीति पुनीत पुरातन जागी,
हर्षण हिय बलिहारि।

(३१४)

भानुकला सुनु तैं सखि मोरी।
शत-शत रहहिं सेविका बागहिं, आज दिखै कितहूँ नहिं थोरी।
जाइ करहु अन्वेषण कारण, आवहु बहुरि बतावहु गोरी।
अचरज लगत हृदय अति हर्षण, काह भयो सबके मन को री।

(३१५)

भानुकला उजियारी अली।

पाइ सुआयसु सिय की शीघ्रहिं, लै कछु सखियन साथ चली।

निरखी जहँ तहँ माला कारिनि, भूमि परी सुधि भूलि भली।

नयन श्रवत तन थर-थर काँपत, पूँछेउ पर नहिं बोल बली।

कछु संकेत समुझि सो चतुरी, आगे चलति बिहार थली।

परम प्रकाश भरी लखि बगिया, वृक्ष पात फल फूल कली।

काह आज इत अचरज आनति, आनहिं आन सुभूमि तली।

हर्षण कछु चलि लखी यकायक, रूप राशि सुख पुञ्ज पली।

(३१६)

जोही रे रस रूप मधुरिमा।

भानुकला भूली सब सुधि बुधि, प्रेम विवश रस दोही रे।

सात्विक भाव उदय तन सिगरे, महि मँह गिरी विमोही रे।

करि उपचार धीर धरि अलियाँ, दीन्ही चेत विछोही रे।

गिरत परत डगमग पग धारति, आई जहँ सिय सोही रे।

देखि दशा तेहिं की तहँ सीता, चकित चहीं भल होहीं रे।

पूँछति अति सनेह समुझावति, काह भयो सखि तोहीं रे।

हर्षण भरति उसास छिनहिं छिन, उतर न आवत ओही रे।

(३१७)

कैसी भरहु उसास आली कहहु हम पाहीं।

नीले नयन भरि वारी, कम्पत न वचन उचारी,
प्रेम पगी सम भास॥आली.॥
नीकी हमार सँग आई, अबहिं गई फुलवाई,
माला कारिनि पास॥आली.॥
काह भयो उत जाई, केहि लखि भान भुलाई,
हर्षण हृदय हुलास॥आली.॥

(३१८)

डस लई रे मोहिं जुलुफ नगिनियाँ।
परी अचेत बाग बिच मालिनि, सोउ विष ते बहु बुझ गई रे।
श्याम गौर सुकुमार सलोने, राज कुअर लखि लय भई रे।
कोटि काम शशि शत शत वारहिं, मधुर-मधुर मुख मधु मई रे।
अकथ अलौकिक अली सुघरता, नख शिख ते छबि जग जई रे।
तनिक विलोकि अलक कल कारी, सुधि बुधि सब कहँ ख्वै दई रे।
सुख सुषुमा श्रृँगार सुमूरति, सरबस लै दृग धँस गई रे।
हर्षण हिय बिच कहर मची है, काह करौं तन पुलकई रे।

(३१९)

अलि मानो न मानो हमारी सही बतियाँ।
गिरा अनयन नयन बिनु वाणी, केहि विधि वरणि कहौं सतियाँ।
औचक अलक निरखि जस मोरी, देखहिं दशा विरह हतिया।
मुख सरोज मकरन्द पियत जो, मम दृग मधुप रसहिं रतिया।

श्री सीत
कहा ह
आय र
परी अ
हर्षण
सखी
चन्द्र
मन
निदि
मानि
गाधि
सिय
हर्षण
मधुम
सीत
अति
नार
भानु
अस

कहा होत मोहि जानि सकौं नहिं, आनन्द सिन्धु मगन मतिया।
आय संदेश कहति किमि सीतहिं, अकथ अगम्य लही गतिया।
परी अचेत मालिनि सिगरी, तलफत कहर मची छतिया।
हर्षण नृपति कुमार हृदय लिय, बौरी भई कहौं कतिया।

(३२०)

सखी री राज कुँअर दोउ देखन योग।
चन्द्र कीर्ति शुचि सुधा श्रवण भरि, मेटत जन भव रोग।
मन ते मनन चित्त ते चिंती, रम जेहिं योगी लोग।
निदिध्यासन करिबे के लायक, रसमय सुखमय भोग।
मानि वचन परतीति सत्य सत, है अन्वेषण जोग।
गाधि तनय सँग मिथिला आये, मुनि तिय मेटे शोग।
सिय पितु मात भ्रात अरु भाभी, सनमाने पुर लोग।
हर्षण अपर सखी कह छबि गृह, तिन्ह आगे जग ढोंग।

(३२१)

मधुमय कथा ललित सुनि मधुकर की।
सीता हृदय कमल-कली विकसित, दर्श चहै दृग रसं झर की।
अति उत्साह उगेउ मन माहीं, भाव भरी पुनि हिय हर की।
नारद वचन सुरति चित आनति, प्रीति बढ़त बहु रस धर की।
भानु कला ते कह है आतुर, मूर्ति लखौं नव जलधर की।
अस उपाय करु सखी सयानी, नयन लाभ लह नरवर की।

चलहुँ कितै वे माला कारिनि, प्रीति पगी प्रिय पथचर की।
हर्षण हृदय हुलास कहौं का, होनहार हठि ह्वै ढर की।

(३२२)

भानुकलहिं करि आगे सिया रस राती चली।
प्रमुदित छवि की खान विलोकन, प्रेम प्रवाह बढ़त रस झोकन,
चहत तृषित जिमि जलहिं दिया॥
शील सँकोच स्वरूप सुहावति, अलिन अवलि अतिशय छबि छावती,
मनहु नखत बिच चन्द्र प्रिया॥
सिय तन वायु परश लहि सिगरी, अमिय मूरि जिमि मृत जन लहरी,
मालिनि भई सचेत धिया॥
आपनि दशा कहे बिनु वरणी, प्रेम पगी पागल सी करणी,
राज कुँअर जिमि जादू किया॥
कहाँ गयो कित बिहरत बागहिं, रूप रसहिं वितरत अनुरागहि,
मर्म न जानहिं कोउ तिया॥
जनक लली के अधिक अधिकतम, आतुरता अकुलावति बिनु मम,
बढ़ अनुराग अनूप हिया॥
हर्षण करि अन्वेषण चाहहिं, सुख सुषमा सुर सरि अवगाहहिं,
श्याम तेज दृग विषय लिया॥

(३२३)

धुनि सुनि कंकण किंकिणि नूपुर की।
परमानन्द मगन मन रघुवर, धन्य मधुर मधु मृदु सुर की।

आपनि दशा विचारि लखन सन, बोले वचन यथा उर की।
सुधा सरिस श्रवणहिं सुख दायक, शब्द हृदय हर धिय धुर की।
अवशि अलौकिक रसमय सुखमय, जो मोहिं कर्षि स्वबस दुर की।
उमा रमा ब्रह्माणी नूपुर, सुर तिय सहित न मोहिं मुर की।
अनुप अकाम अगम्य नेह नव, उपजि रहेउ मम हिय लुर की।
हर्षण जानि न जाय कहौं कत, महिमा महा मधुर स्वर की।

(३२४)

निरखि सिया शोभा सुख पाये।
राम रसिक रघुनन्दन मधुमय, सुख के सिन्धु अपान भुलाये।
हृदय सराहत वाक न निकसत, लखि-लखि लोचन ललित लोभाये।
बहुरि बिचारि धीर धरि बोले, सुनहुँ लखन जो कहहुँ अमाये।
जनक लली येई जिय जानहुँ, जेहि हित यज्ञ विदेह रचाये।
गिरिजा पूजन अलि सँग आई, विहरति बाग प्रकाशहिं छाये।
जासु विलोकि सत्य सुन्दरता, प्रेम पगेउ मन मोर स्वभाये।
आत्मा रमण आत्म जिमि रमही, हर्षण फरक अंग शुभ काये।

(३२५)

सिय प्यारी सुता विदेह की।
चितवति चकित चतुर्दिक जहँ तहँ, नृप किशोर द्युति मेह की।
चितव जहाँ मृग सावक नयनी, वरष अमिय नव नेह की।
जड़ चेतन सब अमृत बनि कै, अमृत चखत अजेह की।
कबहुँ मन्द कहुँ द्रुत गति गवनति, भूलति सुधि सब गेह की।

कहुँ आतुर कहुँ स्तब्ध दिखावति, प्रीति दशा लखि तेहिं की।
अलिगन करि अन्वेषण जहँ तहँ, परिछाई जिमि देह की।
हर्षण लोचन सुधा पियासे, जग रस लागत खेह की।

(३२६)

राज कुँअर रस रूप लखो री।
खड़े लता के ओट मधुर मधु, छहरत छबि अनूप।
उदयाचल जनु उदित भानु युग, भ्राजत द्वौ सुत भूप।
हर्षण निरखि नयन फल लेवहिं, सिय स्वामिनि सुख रूप।

(३२७)

देखि सिया नृप कुँअर रंगीला।
सुख सुषुमा श्रृँगार की खानी, श्याम सुखद सब भाँति शोभिला।
कोटि काम शत चन्द्र लजावन, अँग-अँग भूषण वसन सु पीला।
हर्षि हृदय निज निधि पहिचानी, प्रेम विवस लखि नयन लजीला।
भई विभोर रम्यो चित रामहिं, को हम कहाँ विसरि मन मीला।
नयन मूँदि रघुवर उर आनी, ध्यान मग्न भइ नेह रसीला।
तेहिं औसर दोउ राज कुँअर वर, लता कुँज निकसे सुख सीला।
हर्षण वारिद बीच विलग ह्वै, सोहेउ रवि सम रसमय लीला।

(३२८)

राज कुँअर दोउ श्यामल गौर।
सिर सिरपेंच चौतनी राजित, कुंचित केश केशरिया खौर।

सुन्दर भृगुटि श्रवण लौं लोचन, कजरे रक्त श्वेत चित चोर।
कल कपोल कुंडल प्रतिबिम्बित, जनु युग मीन केलि रस बोर।
सुभग नासिका हलकति मोती, अधरामृत कहँ पियति हिलोर।
चितवनि चलनि मधुर मुख मुसुकनि, हरति हृदय हठि करति विभोर।
काम अनंत चन्द्र शत शारद, लाजत लखि-लखि युगल किशोर।
हर्षण लता कुंज ते प्रगटे, छबि समुद्र रसिकन सिर मौर।

(३२९)

देखहु नृपति कुमार स्वामिनि सुखमय सीया।
लता भवन ते निकसि खड़े है, जनु युग भानु सु भूमि ठड़े हैं,
रघुकुल के उजियार॥
छवि छहराय चतुर्दिक सोहत, जड़ चेतन सबके मन मोहत,
सुख सुषुमा श्रृँगार॥
सखी वचन सुनि ध्यान विरत होइ, रस रूपा रस रूप सुखद जोइ,
लखति सिया हिय हार॥
नख शिख निरखि श्याम सुठि शोभा, मन चित बुद्धि ललकि अति लोभा,
तन मन सुधिहिं बिसार॥
प्रेम पगी अरपी निज आत्महिं, अह मम खोय सनी सुखदात्महि,
मन वाणी बुधि पार॥
देखि दशा इक सखी सयानी, सिय सन कही जोर युग पानी,
मधुरे वचन उचार॥

हर्षण कल अउबै एहिं बेरिया, सनिबै सुठि सुख सँग सब चेरिया,
चलहिं जननि भय भार॥

(३३०)

अवशि अउबै एहि बेला बिहाने।
मातु सुआयसु पाय मुदित मन, सखि सहचरि सब सँगहि लउबै।
गौरी पूजि बाग मिस विहरण, रसमय दृग दिवि दरशन पउबै।
हर्षण हिय को हर्ष सुफल जब, हिलि मिलि मुदमय मंगल गउबै।

(३३१)

सुनि सखी वचन सिया सकुचाई।
जननी शंक चलन चित दीन्ही, पुनि पुनि लखत लोनाई।
सुभग श्याम छवि सिन्धु हृदय धरि, चली वियोग दबाई।
निरखन मिस मृग विहँग तरुहिं तहँ, मुरुकि-मुरुकि मन लाई।
मधुर-मधुर मन मोहन हेरति, प्रीति परम रह छाई।
प्रीति पुरातन अकथ अलौकिक, मन वाणी नहिं जाई।
महाभाव रस रसी किशोरी, गइ गृह गिरजा माई।
हर्षण पूजि विनय अनुसारी, भाव भरी पुलकाई।

(३३२)

जय जय जय गिरिराज किशोरी।
जय-जय शिव की शिवा वल्लभे, जय महेश मुख चन्द्र चकोरी।

जय जग वदन षडानन माता, जगत जननि दामिनि द्युति गोरी।
शक्ति अनादि अचिन्त्य अनन्ती, भव-तिथि लय लीला रस बोरी।
विश्व विमोहनि स्ववश बिहारिणि, नेति नेति कहि वेद थकोरी।
पतिव्रत धर्म धुरी गुण आगरि, सेवत तोहिं सुलभ सब होरी।
अमित दानि उर अंतर यामिनि, कारण प्रगट कियो नहिं सो री।
हर्षण सिय गौरी पद प्रणमी, कहति पुराव मनोरथ मोरी।

(३३३)

विनय प्रेम बस भई भवानी।
प्रगटि उठाय सिया सिर सूँघी, दीन्ह प्रसाद स्व माल सोहानी।
बोली गौरि धन्य धनि सीते, अस स्वभाव नहि अनत सयानी।
हम युत रमा शक्ति ब्रह्माणी, उपजहिं अमित अंश तव आनी।
जानि सकै नहिं महिमा तिहरी, शास्त्र संत श्रुति नेति बखानी।
सो मोहिं दियो बड़ाई बहु विधि, पूत करब दै आशिष वानी।
पूर्ण मनोरथ होहु जनकजे, सो वर मिलै जाहि मन मानी।
सुन्दर सुखद श्याम रस रूपी, हिय हर्षण सत्यहिं जिय जानी।

(३३४)

गौरी सुआशिष मोद मई।
सुनत सिया सुखमय हिय हर्षी, भाव भरी निज शीश लई।
बाम अंग फरकन द्रुत लागे, गिरिजा वचन प्रमाण दई।
सुफल मनोरथ होइहौं सत-सत, सीता उरहिं प्रतीति भई।

निज अनुकूल जानि हर नारिहिं, पुनि-पुनि पुलक सनेह नई।
बहुरि भवानिहिं पुनि-पुनि प्रणमी, सखि सह जननी गृहहिं गई।
देखि सुनैना सियहि दुलारी, भोजन विविध पवाय चयी।
हर्षण गोद लिये मुख निरखति, चह जामात जगत विजयी।

(३३५)

रस रूप करे री राम रसिक।
सुख सुषुमा श्रृँगार सुप्रतिमा, सुखद सियहिं हिय हरषि धरे री।
मालिनि पूँछि प्रसून चयन करि, सुमिरत चले सनेह भरे री।
प्रेम प्रथा अटपट अति न्यारी, धीर धुरंधर धीर हरे री।
पहुँचि प्रणाम किये मुनि राजहिं, राम लषण गुरु डरहिं डरे री।
सुफल मनोरथ होहु सत्य सत, आशिष दिय शिर सूँघि खरे री।
गुरु प्रसन्न गुनि सहज स्वभावहिं, बिन छल बगिया बात वरे री।
हर्षण सबहिं सुनायो रघुवर, सुनि-सुनि मुनि दोउ दृगन झरे री।

(३३६)

दोउ बन्धु की रहनियाँ लखि लखि जय जय बोलत मुनिकुल
मणिसिर मौर।
धनि हियहिं के हरनियाँ सरबस कहि कहि लीन्हे उर मँह है
के विभोर।
गुनि समय सो सुहनियाँ संध्या लहि मुनि आयसु चले चतुर
चित चोर।

करि नियम की पुरनियाँ पूरब देखे पूर्णहिं शशि हिय हर्षण मोर।

(३३७)

चारु चन्द्र विलोकि सिया के सोहनवा मुख की,
सुरति सुहाई जागी हियहिं हिलोर।
प्रेम प्रिया पागे मनहिं के मोहनवा राघव,
सुधि बुधि भागी बनिगे विकल विभोर।
तदाकार भइले रसहिं के दोहनवा रसमय,
रसिया रसिकन के सत सिर मणि मौर।
लखत सिया को मुख हियहिं को हरनमा मानो,
हरषण हिय हुलसत रघुवर रस वीर।

(३३८)

बहुरि ऐहैं एहि बेला में काली।
देखि है चन्द्र छबिहिं रस बोरी, आत्मा रमण राम सुख पै हैं।
जानि विलम्ब अतिहि अनखै हैं, विहरन मुनि नहि पुनः पठै हैं।
हर्षण लखन वचन सुनि रघुवर, भय भरि चले गुरुहिं का कहि हैं।

(३३९)

करत प्रणाम मुनिहि सकुचाये।
राम लखन दोउ बन्धु को मुनिवर, लखत ललकि हिय लाये।
बहुरि कथा ऋषि वरणन लागे, सुनत सबहिं चित चाये।
तेहिं अवसर तहँ तिरहुत राजहु, पहुँचि ऋषिहिं सिर नाये।

लहि इकान्त सो कहेउ कौशिकहिं, भाव भक्ति भल भाये।
धनु मख पूर्ण दिवस कल्ह स्वामिन, जानहिं सब मुनि राये।
तुम्हरेहि हाँथ परम फल सत सत, यागवल्क मुनि गाये।
शिव सहाय भल होहि गिनहु कहि, गाधि तनय सचुपाये।

(३४०)

रंग भूमि बड़ भीर जुरी।
देश-देश के नरपति धनपति, प्रजा समूह पुरी।
अंतिम दिवस यज्ञ फल देखन, नर अरु नारि लुरी।
सभा प्रबन्धक सबहिं मान दै, आसन दिये कुरी।
यागवलिक गुरु बोलि विनय किय, भूपति धीर धुरी।
गाधि तनय सह राज कुमारन, का करि कृपा भुरी।
देहैं देव दिखाय सभा मधि, करि निज कथन फुरी।
मुनिवर कहेउ अबहिं इत आनहु, नहि मम बात मुरी।

(३४१)

दोउ मुनि मिलत सुखहि सुख वर्षत।
याज्ञवल्क कौशिक गति ज्ञाता, संत स्वभाव जनन चित कर्षत।
राम लखन दोउ किये दण्डवत, निमि कुल गुरु हिय लाय प्रहर्षत।
चलन चहिय अब रंग भूमि कहँ, जनक विनय कहि देखन तरसत।
बहुरि कहेव कौशिक कहँ मुनिवर, रावरि कृपा यज्ञ फल दरसत।
जनक इष्ट पूरन के हेतहिं, आये राज कुँअर लै सत सत।

त्रिकालज्ञ तुम मुनि कुल पूषण, गाधि तनय कह निमिगुरु परशत।
राम जौन जानहु जेहि कारण, अवनि अवतरयो हर्ष अधर सत।

(३४२)

गाधि तनय सुठि सुख सों सरसाये हैं,
मुनि गण बीच बैठि वचन सुनाये हैं।
यज्ञ पूर्ण आज द्यौस चलहिं तहाँ, ईश काहि कीर्ति देय भल भाये हैं।
सुनत समाज बोल उठी लखन सह, सुयश पात्र सोइ जाहि गुरु दाये हैं।
सुनि सुख मानि सुरहु प्रसून झरै, दुंदुभी बजाय जयति जय गाये हैं।
मन मुसकात राम राग द्वैष बिनु, हीय हर्षि हठि हर्षणहिं लोभाये हैं।

(३४३)

रंग भूमि आये दशरथ कुमार हैं,
छबि छहरात कोटि काम मदगार हैं।
गुरु गाधि तनय साथ-साथ, धारे धनुशर औ सुभाथ,
राम लखन दोउ वीर बरियार हैं।
सुनि-सुनि पुर वासी सुभाय, छोड़ि-छोड़ि गृहहिं चले धाय,
बाल वृद्ध औ युवा सकल नर-नार हैं।
जो जैसहिं रह करत काज, सो तैसहिं भल भगत भ्राज,
आर्य धर्म लोक लाज झोंक भार हैं।
जाको जैसो भाव हीय, ताको तैसो दरश दीय,
नौ रस पंच रस भाव अनुसार हैं।

सबहिं सभा सुख में समाय, भूलि देह सुधिहू न आय,
परम प्रेम पगे बहत नयन धार है।
प्राण प्राण जिव जिव समान, लागत प्रिय सब कहँ सुजान,
हेरि हेरि हर्ष कोउ नहिं दृग टार है।
देखि मिथलेश दौरि आय, कौशिक पद पहँ परे जाय,
दोउ बन्धु लीन्हे हियहिं हिय हार हैं।

(३४४)

अभिमत आशिष कौशिक दीने।
सुनि सुख सानि भूप मिथिलेशहु, पुनि पुनि पद रज लीने।
चले लिवाय यथोचित सादर, भक्ति भाव भल भीने।
रंग भूमि करि विनय बतावत, धनुर्यज्ञ जिमि कीने।
राम लखन सह कौशिक निरखत, सुनत बात सब झीने।
भलि रचना विधि विस्मय दायक, नृप ते कहे प्रवीने।
महिप मुदित जोरे युग पाणिहिं, बोले वचन अधीने।
रावरि कृपा सबहिं भल हर्षण, होइहि सत सत चीने।

(३४५)

अवध ते आय सुख सगरा, अहो मन मोहि लियो नगरा।
सुहावन श्याम सुखकारी, करोड़ो काम मदगारी,
विराजत रंग थल भारी, लुभावन हरत हठि हियरा॥
जुलुफ जालिम कलित कारी, क्रीट सिर रवि द्योति हारी,
खौर चन्दन की छबि न्यारी, वशीकर यंत्र जनु दियरा॥

वृहद भृकुटी मनहि मोहैं, श्रवण लौ लोचनहु सोहैं,
चारु चितवनि जबहिं जोहैं, चोरि चित्तहिं करत पियरा॥
हलनि कुण्डल कल कपोले, मीन मधु सर जनु किलोलै,
लेत लखतहिं बिना मोलै, करत जन जन कहर जियरा॥
अधर मधुमय अतिहिं लोने, विम्ब फल की छबिहु खोने,
तहाँ नक मुक्ति हिलकोने, पियति रस रसहिं हरि हियरा॥
पीत वर बसन बनमाली, अँग अँग भूषण सम्हाली,
सुभग सुठि शोभ को शाली, रह न लखि-लखि धीर धियरा॥
करन धनु बाण वर धारे, नारि नर के दृगन तारे,
कहत पुर के पुरुष तिया रे, हर्ष चाहैं होन नियरा॥

(३४६)

राजते रसमय प्रणतन पाला,
मोहते मख महि दशरथ लाला।
हेरते नर नारि दृग भावते, बूड़ते प्रेम रसहिं सुहावते,
लेखते धन्य अपुहिं सु चावते, ढारते वारि लोचन विशाला॥
जानकी के योग अनुमानहीं, प्राण के प्राण मम सब जानहीं,
आवती विरह शंक स्वभाव ही, पावते क्लेश कठिन तेहिं काला॥
धारते धीर पुनः सु वेष हीं, भावते भरे सबै सो पेखहीं,
भूलते स्व भान देह गेह की, हीय के हर्षण राम रसाला॥

(३४७)

राम लखन सह कौशिक प्रवीने।

तिरहुत भूप संग संग गवनत, निरखत सभा शोभीने।
नृप गण प्रजा नारि नर सिगरे, विप्र साधु जग तीने।
उठे भाव भरि तेज परम लखि, देखत नयन लोभीने।
सब मंचन् ते मंच विशद इक, सुन्दर सुखद सुचीने।
कर गहि विनय भाव भरि नरपति, नृपन मध्य महँ दीने।
छत्र चमर छहरत सिर ऊपर, श्री निधि सेवा लीने।
छबि समुद्र की बिन्दु निकसि तहँ, हर्ष सबहिं लय कीने।

(३४८)

मोहे-मोहे मनुआ राघौ मोहनी मुरतिया हाय रे श्यामला,
बैठो सिंहासन चित को चोर। हाय रे श्यामला।
सिर में मणि क्रिटिया सोहे, चन्दन केशरिया हाय रे श्यामला।
कुँचित केशिया रस बोर। हाय रे श्यामला।
कुण्डल किलोलिया गण्डे मानौ मछलिया, हाय रे श्यामला।
चितवनि चोरनियाँ दृग कोर। हाय रे श्यामला।
मुख की मुसकनियाँ मोहे अधर लोभनिया, हायरे श्यामला।
नक मणि सोभिया भल लोर। हाय रे श्यामला।
राजत बिच बिचिया राजै शोभा अपरिया हायरे श्यामला।
हर्षण रसिया रस घोर। हाय रे श्यामला।

(३४९)

राम रूप मोहे महि के महिपाल हैं,
हेरि-हेरि वारे सर्वस सुख शाल हैं।

जमी जिय महँ प्रतीति प्रीति, जेहि महँ रम योगी अतीत,
सोइ राम रघुवर कालहु के काल हैं।
सीता पति रघुवीर सदा, जग जननि जनक प्रेम प्रदा,
वेद वेद्य ललित कौशिला के लाल हैं।
भंजि धनु अवशि राम राय, कीर्ति विजय लहिं हैं अघाय,
सिया सुभग पाणि मेलिहैं जयमाल हैं।
सुर नर मुनि आनँद समोय, जय-जय-जय कहि हैं प्रजोय,
निरखि ब्याह झाँकी होईहै निहाल हैं।
आय यहाँ भल नाहि कीन, तोरन धनु हम मनहिं दीन,
सिंह भाग जिमि जग चाहै श्रृँगाल हैं।
मातहिं नारी करन चाह, तथा दोष बनिगो अथाह,
पुत्रि सौंपि सीतहिं मेटहिं अघ जाल हैं।
नतरू बहहिं दुख की कुधार, जरत जियहिं जीहैं गँवार,
हर्ष राम के कहाय चाखहिं रसाल हैं।

(३५०)

अहो क्या कोटि काम छबि छाया।
कौशिक संग आय पुरवासिन, लखतहिं ललित लोभाया।
सुखद सुभग सुकुमार साँवरो, चितवत चितहिं चोराया।
राम रूप रसमय दृग देखत, कोउ नहिं पलक लगाया।
तैसहिं सिय छबि सुरति हृदय महँ, अतिशय कहर मचाया।
मनहु महोदधि अरु रत्नाकर, मिलि लहरन लहराया।

पुर नर नारि चहत जिय माहीं, धनुष भंजि रघुराया।
हर्षण सिया वरहिं सुख दायक, नतरु मरब भल भाया।

(३५१)

सुन्दर सुख खानी राघव रस रूपी हेरत हो मिथिला महाराजा,
प्रीति जागी जान्यो जानकी जान॥
सुख के सागर में सोये रस रसिया, हो मिथिला महाराजा,
दृग के दोनन कर पान॥
तैसे श्री सुनैना रानी रसि अवलोकति, हो मिथिला महाराजा,
मानति प्राणहू की प्राण॥
लक्ष्मी निधि सह सिद्धी तैसहिं दृग देखत, हो मिथिला महाराजा,
भाम भाव रसि रस खान॥
जनक किशोरी अनुभव को कह जस पेखत, हो मिथिला महाराजा,
महाभाव हर्ष उर आन॥

(३५२)

बोले बन्दी बात प्रमाण।
द्वीप-द्वीप के नृपति सबै सत, वचन सुनहु दै कान।
धनु पुरारि को कठिन गरुअतम, लेहु सबै जिय जान।
रावण बाण जाहि नहिं परशे, गवने तजत गुमान।
सोइ शिव चाप कठोर तोरि जो, लहिहैं सुयश महान।
ताके गल जय माल जानकी, मेलिहैं अपने पानि।

सदगुण खानि रूप उजियारी, जगत न जेहि सम आन।
सुख स्वरूप सिय विजय कीर्ति हित, हर्षण को भगवान।

(३५३)

धनु मख पूरण को दिन आज, सुनहिं सकल भूपति भल भ्राज।
बीते आज यत्न जो करिहैं, विफल मनोरथ जिय महँ जरिहैं,
तेहि ते बन्दी करत अवाज॥
बैठि जानकी रतन अटारी, कर जय माल लिये सुख सारी,
काल प्रतीक्षा करति विराज॥
रूप शील सद्गुण की सागरि, धर्म धुरी त्रैलोक उजागरि,
तेज स्व-रक्षित-सुभट समाज॥
अस विचारि जिय जो ललचाया, धनु खंडन को करै उपाया,
हर्षण आयसु नृप सिर ताज॥

(३५४)

खबर कर दो मिथिलेश्वर को, नृपसदसि संमत वचन वर को।
सुनु बन्दी तै अति चतुर, नृप गण विशद विचार,
धनु भंजन की बात अब, बहुरि कहै जनि जार,
विचारे जो कहैं हम अर को॥
श्री शंकर को धनु अहै, खण्डे अति अपचार,
तेहि ते नहिं भंजन चहै, नृपति समाज सम्हार,
झुकाये शम्भु पद सिर को॥

दूजे जेहि कहँ नहिं छुये, रावणं बाण महान,
तेहि कहँ हम कत तोरि सक, सिगरे मित बलवान,
धरैं नहिं धनु पै निज कर को।।

तीजे जाने हम सबै, भक्तन के भगवान,
पर ब्रह्म परमात्मा, दशरथ सुत इत आन,
विराजे तेज दिनकर को।।

सोई शिव को चाप यह, तोरिहैं विकट विशाल,
सिया पाणि गल मेलिहैं, सुन्दर शुचि जयमाल,
कहैं सत सत हृदय हर को।।

देखहिं हम सब नयन भरि, सीता राम विवाह,
निज कन्या सिय दासि करि, मन महँ महा उमाह,
कहैं जय हर्ष रघुवर को।।

जगत जनक श्री राम सत, जगत जननि सिय जानि,
हर्षण भरि लोचन निरखि, लेहिं जन्म फल पानि,
सुहावैं संत समसर को।।

(३५५)

सुनत नृपन की बात सो भाँटा।
कछु नहि कहेउ बुद्धि वर सोऊ, राम रूप रस चाटा।
ठाढ़ रहेउ धरि धीर हृदय महँ, लखत ऋषिहिं कर ठाटा।
भावित नृपन वचन निज कानन, सुनेउ यदपि मुनि राटा।
जनक प्रीति परखन के हेतहिं, कछु न कहेउ मधु-खाटा।

रामहु बिनु गुरु आयसु बैठे, गये न धनु की वाटा।
हर्ष विषाद रहित निरपेक्षी, सहज स्वरूप अकाटा।
हर्षण सभा शान्त चुप साधी, दंड युगल सन्नाटा।

(३५६)

नृपन विलोकि जनक अकुलाने।
सभामध्य सिय सुधि कर विलपत, हृदय करूण रस साने।
देश-देश के भूपति आये, सुनि सुनि मम प्रण ठाने।
तिल भरि भूमि छोड़ाय सके नहिं, अति कठोर धनु माने।
यज्ञ पूर्ण दिन आज नृपति सब, रामहिं निरखि लोभाने।
धनु भंजन की सुनहि न बाती, भाव भक्ति रस आने।
जानतहु ऋषि कौशिक रामहिं, नहिं अनुशासन ताने।
हर्षण समय कहा धौं आयो, विधिना सर्वस जाने।

(३५७)

हा हा जानकि जान हमारी, सीते परम पियारी।
नित-नित तुमहि दृगन अब देखि हौं, बैठि गृहहिं कुँआरी।
रूप शील गुण गेह कियो विधि, सब विधि तुमहिं सम्हारी।
मो अभागि गृह कत जनमायो, कियो न नेक विचारी।
तिहुँ पुर सब करिहैं उपहासी, जनक अधर्म अनारी।
सिय अस पुत्रि बिना पति पेखै, निज अघ के अनुसारी।
प्रण त्यागे सत सुकृत सिराबै, लागै निमिकुल गारी।
हर्षण हाय सूझ नहिं आँखिन, बूड़ि रहयो मझधारी।

(३५८)

लक्ष्मी निधि दुख झूलना झूलत झकझोरी।
सुनि पितु वचन करुण रस साने, तन मन सुधि सब भूल अमाने,
सिय को सोच अतूलना, उपजेउ उर फोरी॥
जो सिय रहहिं गृहहिं बिन ब्याहा, करिहौं काह कहत हिय दाहा,
गिरेउ भूमि हिय हूलना, आँसुन तन बोरी॥
भ्रात सखा तहँ धीर बँधावत, तदपि न ज्ञान हर्ष हिय आवत,
संशय सर्प विषूलना, काटेव विष घोरी॥

(३५९)

वचन सुनत मिथिलेश को।
सिय की मातु सुनैना दुख सनि, बिलपति लखि अवधेश को।
हे विधि रामहिं आनि जनकपुर, दियो लाभ दृग देश को।
तो कत कौशिक प्रेर न रामहिं, खंडन चाप महेश को।
सिय के योग श्याम नृप वारो, देहु कृपा करि एष को।
सियहिं कुँअरि लखौ नहिं नयनहिं, तजौ प्राण गिन लेश को।
सब दुख दुसह देहु पै विधिना, लखहुँ सियावर वेष को।
हर्षण विनय सुनहु शिव मोरी, राम लहहिं सिय-प्रेष को।

(३६०)

जनक वचन सुनि सकल समाज।
पुर वासी नर नारि दुखहि भरि, वारि विमोच विराज।

विनय करत विधि ते मन माहीं, हिय की हरु अवाज।
धनुहि भंजि सिय कीर्ति विजय बड़ि, वरहिं राम रघुराज।
नतरु मरन देवहिं मुख माँगे, परम प्रीति के काज।
जन्म-जन्म को सुकृत सबहिं लै, लाल लली सँग भ्राज।
राम छोड़ि सिय योग अन्य नहिं, सजहु उचित सुख साज।
हर्षण शोक सिन्धु अवगाहहिं, मानहु विकल जहाज।

(३६१)

लखि निमिपुर नर नार, सीता सखिन ते बोली,
शोक सरित वरियार, आली उमड़ि डग डोली।
प्रीति पगे बड़ि मोरी, कहैं कवि कोरी, पुरवासी सब वार,
बैठे दृगन दुख घोली॥
जननी जनक भल भ्राता, दुसह दुख गाता, तन मन सुधिहिं विसार,
प्रीति परम बिन तोली॥
निरखैं कौशिक ओरी, सबहिं ह्वै भोरी, मनहुँ कहहिं करु पार,
विनवै विनय हिय खोली॥
सोह राम निष्कामा, शान्त सुख धामा, धनुषभंजि किमि तार,
हर्षण न कह मुनि मौली॥

(३६२)

सुनु सत सिय सुकुमारि, तोरिहैं धनुष धनुधारी।
सुख सनिहैं नर नारि, मंगल करी करतारी।

माता पिता सुख सोइहैं, भ्रात भल जोइहैं, बाढ़ी आनँद धारि,
सनिहैं सुभग सुख वारी।।
निरखौ लखन की ओरी, अहा कृप कोरी, चितय–सभा दृग वारि,
पेखत बहुरि गुरु पारी।।
सैनहिं सबन्ह दुख भारी, कहत मुनि टारी, फरक भुजा सुख कारि,
मोरी सुनहु प्रिय प्यारी।।
धीरज धरहु मन माहीं, सगुन दरशाहीं, हर्षण जनि हिय हारि,
रसिहौ रसहि सुख सारी।।

(३६३)

सुनि सखि वचन सिया धरि धीर।
निरखति सुखद श्याम सुन्दरता, नयनन ढारति नीर।
प्रीति दशा अटपटी अनोखी, करत करेजे पीर।
गुरुजन लाज दबावति यद्यपि, छिपै न प्रेम प्रवीर।
गोमय देय दुराव को घावहिं, बीधे चोखे तीर।
मन चित बुद्धि रमे श्रीरामहिं, भूली सुधिहु शरीर।
वाक बुद्धि मन पार पुरातन, नेह नवल गंभीर।
हर्षण गौरि अशीष सुरति करि, पुलकति सिय सुखसीर।

(३६४)

लखत समाज लाल लखन अति अकुलाने हैं।
जियहिं जानि जनक प्रीति रीति के प्रमाने हैं।।

दयासिन्धु अति उदार, संतत पर हित सम्हार।
पीर परी पेखि स्वयं शोक सिन्धु साने हैं।।
गहै गुरु चरण जाय, पाणि जोरि हिय त्वराय।
सर्व दु:ख समन वचन विनय वर बखाने हैं।।
शोक सिन्धु इतहिं आय, बोर्‌यो जन जन अथाय।
जनक दशा देखि द्रविय मुनि मधि महाने हैं।।
आयसु लहि अबहिं राम, भंजै भव धनु अकाम।
तारि सबहिं वितरि सुखहिं अतिशय अघाने हैं।।
तीन लोक सुयश छाय, चन्द्रकीर्ति कथा गाय।
करहिं भवहिं पार सबै परम प्रीति पाने हैं।।
सिया राम को विवाह, लखहिं लोग भरि उछाह।
सुमन वर्षि सुरहु सकल, मोद मनहिं आने हैं।।
तोरतेउँ मैं अबहिं चाप, जो सिय फल प्रणन थाप।
पाप परिणाम कठिन जानि जिय चुपाने हैं।।
कीजै नहिं देर नाथ, कुसमय में संत साथ।
सबहिं देत हर्ष वेद शास्त्र वदत बाने हैं।।

(३६५)

कौशिक लखनहिं ललकि लये हैं।
शीश सूँघि उर लाय वारि दृग, जय जय कहत अशीष कये हैं।।
दुसह दोष-दुख दमन दिव्य तनु, अवध अवनि अवतरित भये हैं।।
जीव शोक स्वपनेहु न देख सक, सदाचार्य सत रहनि छये हैं।।

कृपा सिन्धु कोमल करुणा कर, अति उदार सब सबहिं दये हैं।।
शेषी स्वामि सहज गुन रामहिं, स्वयं शेष थिति सहज ठये हैं।।
त्रय अकार संपन्न प्रेम पथ, राम विरह नहिं जियब चये हैं।।
हर्षण लोक प्रशिक्षण केवल, वपु धरि विहरत जगत जये है।।

(३६६)

सुर नर मुनि तरण तार, सबके हितकारी।
सदगुरु कौशिक कृपालु, समुझि शोक-समन काल,
निरखे दशरथ के लाल, नयन नेह वारी।
बोले मधु मधुर बानि, सुनियो सारँग सुपानि,
भंजहु भव धनु महानि, शोक-सिन्धु तारी।
तात मेटि जनक ताप, कीर्ति विजय सिय स्वथाप,
लहहु लाल लखि प्रताप, संत सब सुखारी।
तीन लोक मुदित होय, सुमन वर्षि लखहिं लोय,
जय जय कहि रसहिं मोय, हर्षण हिय हारी।

(३६७)

सुनि गुरु वचन चरण सिर नाये।
हर्ष विषाद नेक नहिं मन महँ, ठाढ भये प्रभु सहज स्वभाये।
वयस किशोरी कलित षोडषी, ठवनि युवा मृग राज लजाये।
उदित उदय गिरि मंचहिं ते जनु, बाल भानु तम नाशि सुहाये।
विकसे प्रेमी पंकज मधुमय, नयन भ्रमर हर्षित रस पाये।

भये विशोकित सुर मुनि को कहु, वर्षहि सुमन सेव सरसाये।
अपलक निरखि नारि नर प्रमुदित, राम रूप रस सिन्धु समाये।
हर्षण मंगल पढ़ि जय उचरत, जो जन सीय स्वयम्बर आये।

(३६८)

गुरु–पद वन्दि मुनिन ते आयसु, मांगत मोदित रघुकुल राम।
गाधि तनय कौशिक मुनिराया, दिय निदेश खण्डन धनुकाया।
तैसहिं दै अशीष मुनि सिगरे, कहहिं जाहिं परिपूरण काम।
गुरु आज्ञा अघटित घटवाऊँ, घटितहिं क्षण महँ अघट बनाऊँ।
काह करौ नहिं संत कृपा ते, सब समर्थ बनि विना विराम।
जनकहिं शोक समुद्र प्रतारौं, सुर मुनि संत जनन सुख सारौं।
हर्षण हिय हुलसाय सबन को, देवहुँ द्रुत निर्भय विश्राम।

(३६९)

लहि निदेश मुनि राय के, हर्ष विषाद विहाय के।
सहजहिं चले सकल जग नायक, नृप कुमार सिर नाय के।
गुरु गौरव दरशाय के॥
चलत राम पुरवासी सिगरे, बाल वृद्ध पुलकाय के।
निरखहिं नयन लुभाय के॥
प्रेम पगे सुख सरसत नव नव, नेह नीर दृग छाय के।
शोभासिन्धु समाय के॥

कृषक सुखी जनु ससि के सूखत, उठी घटा घहराय के।
वर्षन चह नियराय के॥
बन्दि पितर सुर सुकृत समर्पत, विनवत बहुत बनाय के।
प्रीति प्रतीति स्वभाय के॥
करहिं कृपा शिव गणपति गौरी, उरते अतिहिं अघाय के।
जेहि ते सुख सरसाय के॥
भंजहि भव धनु राम बिना श्रम, हर्षण हिय हुलसाय के।
कीर्तन कर रस पाय के॥

(३७०)

बहिनी विलोकु तनि हे, माधुरी मुरतिया मोहे,
बरबस मनुवा मोर, कहरिया भेलथिन हियरा।
नख शिख शोभा सोही, मन्मथ कोटिक मोही,
मुसुकि मधुरिया सोहे, सुख कर सुषुमा जोर,
लुभायल बरबस जियरा।
कञ्जहु कोमल तनुवाँ, कैसे भंजै धनुवाँ,
सिरसि सुमनियाँ आहाँ, कैसे बज्रहिं फोर, डेरायल धड़कल धियरा।
सब सुर शक्ति समेते, करहिं कृपा जग जेते,
हर्ष हरषिया राघव, शिव के चापहिं तोर,
वरै सिय प्राणन पियरा।

(३७१)

सखी री नील नीरधर श्याम।